लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक : २७५
सम्पादक एवं नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन
द्वितीय संस्करण : नवम्बर १९७१

श्री रामायण दर्शनम्

(कविता)

कु. वें. पुट्टप्पा

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
३६२०/२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
मुद्रक
सन्मति मुद्रणालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५

० ० ० ०

SRI RAMAYANA DARSHANAM

(Poetry)

K. V. Puttappa

Published by : BHARATIYA JNANPITH
3620/21, Netajee Subhash Marg, Delhi-6
(*Phone* : 272582. *Gram* : 'JNANPITH', Delhi)

Price
Rs. 5.00

मूल्य : पाँच रुपये

प्रस्तुति

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रवर्तित राष्ट्र के सर्वोच्च साहित्य-पुरस्कार से सम्मानित डॉ. कु. वें. पुट्टप्पा द्वारा रचित कन्नड़ महाकाव्य 'श्री रामायण दर्शनम्' के प्रारम्भिक अंशों का यह हिन्दी अनुवाद मूल कन्नड़ कविता के देवनागरी लिप्यन्तरणसहित प्रस्तुत है। पुरस्कार समर्पण समारोह के अवसर पर कवि की इस भव्य रचना का एक पूर्वरंग, एक हलका-सा आभास पाठक पा सकें; इसलिए कृति का अंशतः प्रकाशन आयोजित किया है।

कृति विशाल है, और अनुवाद-कार्य कठिन तथा श्रम-साध्य। फिर भी, डॉ. सरोजिनी महिषी ने समारोह के अवसर को ध्यान में रखकर कुछ अंशों का अनुवाद प्रस्तुत किया है। स्वयं कवि ने अनुवाद के लिए कुछ और स्थलों का चयन कर दिया है। हमें आशा है कि शेषांश के साथ हम इस कृति का पहला संस्करण निकट भविष्य में ही प्रकाशित कर सकेंगे।

अनुवाद के सम्बन्ध में स्वयं अनुवादिका, डॉ. सरोजिनी महिषी ने एक आमुख अंकित कर दिया है। उस से अधिक प्रामाणिक बात और कही भी क्या जा सकती है? कृति के साथ पूरा न्याय तो तभी हो सकेगा जब इस का सम्पूर्ण और सर्वांग संस्करण प्रकाशित हो। इस पूर्वरंग को कवि की प्रतिभा के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के उद्देश्य से हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

नयी दिल्ली
२० दिसम्बर, १९६८

लक्ष्मीचन्द्र जैन
संयोजक-सम्पादक
लोकोदय ग्रन्थमाला

द्वितीय संस्करण

'श्री रामायण दर्शनम्' के प्रथम संस्करण की प्रतियाँ अत्यन्त सीमित संख्या में छपी थीं। और अन्तिम प्रूफ़ लगभग समारोह के दिन ही देखे जा सके थे; अतः सोचा था, परिवर्द्धित संस्करण बाद में निकालने का प्रयत्न किया जायेगा। जो प्रतियाँ पहले छपी थीं, वे प्रायः समारोह के दिन ही भेंट-वितरण में समाप्त हो गयीं।

जब तक परिवर्द्धित संस्करण तैयार नहीं हो जाता, प्रकाशित नहीं हो जाता, तब तक पुराने संस्करण से हिन्दी-जगत् को वंचित रखना उचित नहीं लगा। इस लिए यह दूसरा संस्करण 'पूर्वरंग' जैसा ही पाठकों के हाथों समर्पित किया जा रहा है।

इस बीच इतना अवश्य हुआ कि इस कृति के प्रति समस्त भारतीय साहित्य जगत् का आकर्षण बढ़ा है। इस सम्बन्ध में अन्यत्र कुछ योजनाएँ भी विचाराधीन हैं। मूल कृतिकार कविवर 'कुवेंपु' और अनुवादिका डॉ. सरोजिनी महिषी के प्रति आभार व्यक्त करने का यह नया अवसर ज्ञानपीठ के लिए अत्यन्त सुखद है।

लक्ष्मीचन्द्र जैन

नयी दिल्ली
१ जून, १९७१

डॉ० कु० वें० पुट्टप्पा
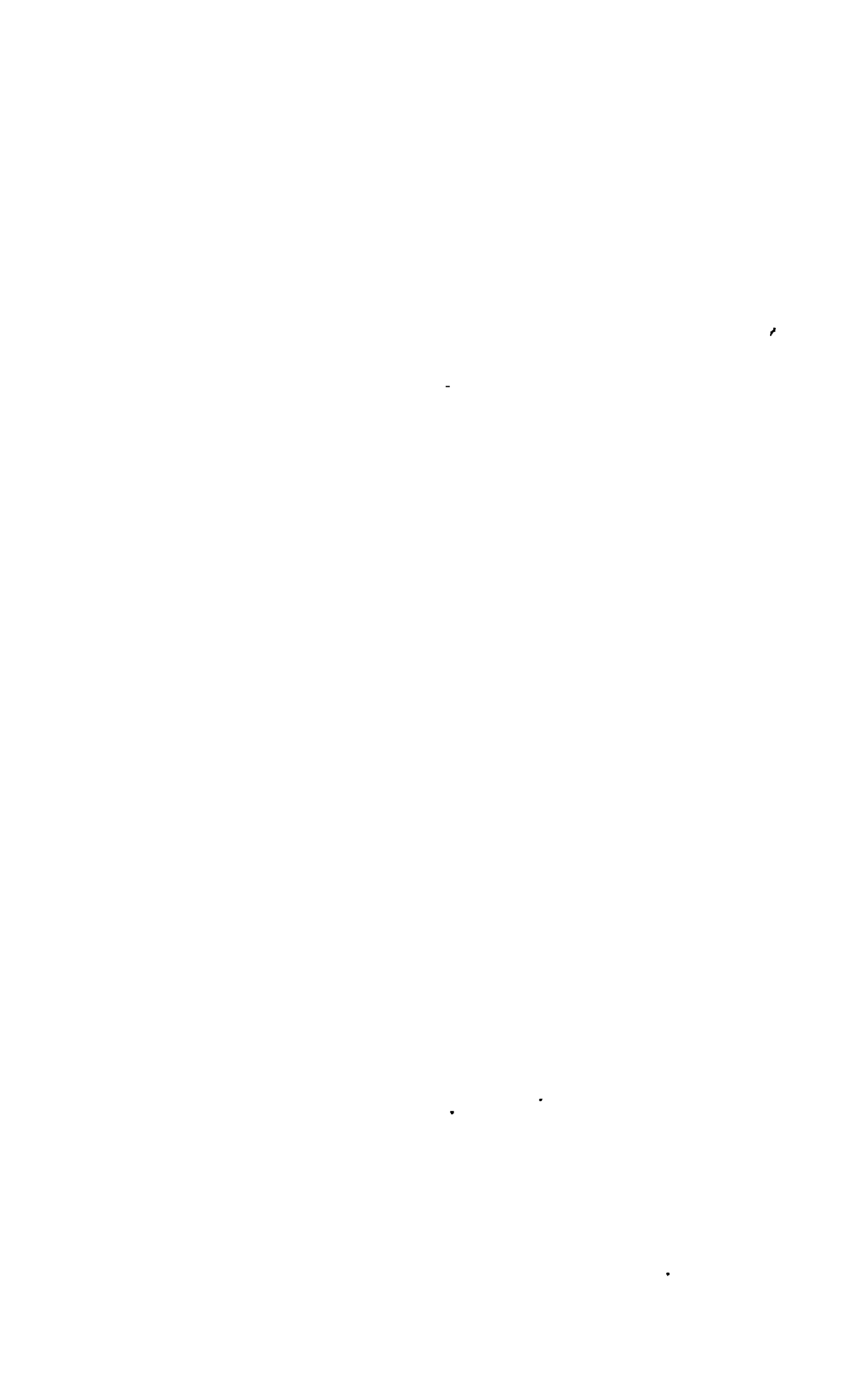
अनुवादवन्नु कुरितु—

कविहृदयवनु अरियुवदु कष्टसाध्य
दिव्य रस रचनेयेल्लि ? अन्नमयवेल्लि ?
मर्त्यवेल्लि ? ता दिव्य चेतनवेल्लि ?
वागर्थदलि दारिद्रय, अनुवादवेल्लि ?

अल्प प्रयास विदो कोळ्ळि करुणेयिम्
ज्ञानपीठद प्रेरणे, प्रोत्साह मिगिलु
शान्तियि केळिदरु कविवररु अनुवाद
व्यक्त गोळिसिदरु आनन्दवेन्न भाग्य !

अनुवादविदु मत्ते काव्यदल्लिहुदो
रसात्मक वाक्यदल्लिये इहुदो
सहृदयतेयलि केळिदरु माचवेयवरु
तम्म परितोषवनु व्यक्तगोळिसिदरु

रामायणद दरुशनव कण्डु हाडिहरु
कविवररु कर्नाटकद कर्णवीणेयु
तुंबि झेंकरिसुवन्ते, कादिहरु
जनरीग तुंबलदु भारतद कर्णवीणे !

अनुवाद के सम्बन्ध में—

कवि हृदय नहीं समझ पाता
कहाँ रस, रचना कहाँ अन्नमय ?
कहाँ मर्त्य, कहाँ दिव्य चेतन ?
निर्धनता वागर्थ में, अनुवाद कहाँ ?
किया प्रयास अल्प, ज्ञानपीठ की
है प्रेरणा, प्रोत्साह सब कुछ;
सुना कविवर ने अनुवाद हिन्दी का
आनन्द प्रकट किया, भाग्य मेरा ।

अनुवाद है यह काव्य में ?
या रसात्मक वाक्य में ?
सहृदयता से सुना माचवे जी ने
परितोष अपना प्रकट किया

गायी रामकथा कविवर ने पूरी
कर्नाटक की कर्णवीणा भरे, झंकार उठे
यह है दिव्य कथा का अनुवाद
है आशा भारत की कर्णवीणा भरे ।

—सरोजिनी महिषी

श्री वेंकण्णय्यनवरिगे—

इदो मुगिसितंदिहेन् ई बृहद्गानमम्
निम्म सिरियडिगोप्पिसल्के, ओ प्रिय गुरुवे
करुणिसि निम्म हरकेय वलद शिष्यनम्
काव्यमं केळ्वोंदु कृपेगे कृतकृत्यनंम्
धन्यनं माडि. नीमुदयरविगैतन्दु
केळलेळसिदिरिन्दु किरुगवनंगळनोदि
मेच्चिसिदेननितरोळे वैगाय्तु "मत्तोम्मे
बरुवे दिनवेल्लमुं केळ्वेनोदुवेयन्ते,
रामायणं अदुं विरामयणं कणा !"
एन्दु मनेगैदिदिरि मनेगैदिदिरि दिटम्,
दिटद मनेगैदिदिरि

इदो बन्दिरुवेनिन्दु
मुगिसि तंदिहेना महागानमम् पिन्ते
वाल्मीकियुलिद कथेयादोडं कन्नडदि
बेरे कथेयेंवते, बेरे मेय्यांतन्ते.
मरुवुट्टु बडेदन्ते मूडिदी काव्यमम्
विश्ववाणिगे मुडिय मणि माडिहेन्, निम्म
कृपेयिन्दे-पूर्वद महाकविगळेल्लरुम्
नेरेद सग्गद सभेगे परिचयिसिरेन्ननुम्
संघके महाध्यक्षरल्ते नीं ? किरियनाम्
हिरियरिगे हाडुवेन् केळ्वुदाशीर्वादम् !

नुडियुतिहुदा दिव्य कवि सभेगे गुरुवाणि केळ्
आलिसा गुरुकृपेय शिष्यकृति संकीर्तियम्:
"बहिर्घटनेयं प्रतिकृतिसुवा लौकिक
चरित्रेयल्तिदु, अलौकिक नित्यसत्यंगळम्
प्रतिमिसुव सत्यस्य सत्य कथनं कणा,
श्रीकुवेंपुव सृजिसिदी महाछन्दस्सिन

श्रीमान् वेंकण्णय्या जी को

लीजिए, लाया हूँ वृहद् गान की कृति
आप के पदकमलों पर अर्पण करने, ओ गुरु
करुणा वरसाओ इस शिष्य पर
जिस के लिए आशीर्वाद वल हैं।
आप ने की काव्य सुनने की कृपा
मैं वना कृतकृत्य ही उस से
आप पधारे उदयरवि[1] तक,
काव्य सुनने की इच्छा प्रकट की
छोटी कविताएँ मैं ने सुनायीं,
उतने में ही देर हो गयी वहुत
"मैं फिर आऊँगा, दिन भर सुनाओ
रामायण है सच विरामायण ही"
कहा आप ने चले गये घर
सत्य आप घर चले, सत्य के ही घर चले

लीजिए, आया हूँ आज,
साथ ले कर महागान की रचना
सच, वाल्मीकि ने गायी यह कथा
किन्तु लगती कन्नड़ में अलग ही
लगता, कथा ने नया रूप धारण किया
नया जन्म ही ले लिया
विश्ववाणी का शिरोरत्न वनी है
आप की कृपा से—प्राचीन महाकवियों से
स्वर्ग की सभा में परिचय कराइए

संघ के हैं अध्यक्ष आप, छोटा मैं
गाता हूँ, आशीर्वचन माँगता हूँ

दिव्य-कवि सभा में उद्घोपित वाणी सुनो
गुरुकृपा कितनी शिष्यकृति-कीर्तन में
'यह नहीं लौकिक रचना, प्रतिविम्व
नहीं वाह्य घटना का, है प्रतिविम्व

---

१. उदयरवि—कवि का निवास।

मेरुकृति, मेण् जगद्भव्य रामायणम्
वन्निमाशीर्वादमं तन्निमाविर्भविसि
अवतरिसिमी पुण्यकृतिय रसकोशक्के
नित्य रामायणद हे दिव्य-चेतनगळिर ।
वागर्थ रथवेरि, भावदग्नियं पथं-
बिडिदु वन्नि, सच्चिदानन्द पूजेयम्
सहृदय हृदय भक्ति नैवेद्यमं कोण्डु
ओदुवर्गॊलिपर्गॊलिदीये चिन्कान्तियम् ।
नित्यशक्तिगळिन्तु नीं कथेय लीलेगे नोंतु

रसरूपदिंदिळियुतेम्मी मनोमयके
प्राणमयदोळ् चरिसुतन्नमयकवतरिसे,
श्रीरामना लोकदिंदवतरसि बन्दु
ई लोकसंभवेयनेम्म भू जातेयम्
सीतेयं वरिसुलाकेय नेवदि मृच्छक्तियम्,

मर्दिसुते, संवर्धिसिर्प वोल् चिच्छक्तियम्,–
रावणाविद्येयी नम्म मर्त्य प्रज्ञे ताम्
तन्न तमदिं मुक्तमप्पुदु, दिटं, निम्म
दीप्यदैवी प्रज्ञेयमृत गोपुरकेर्ववोल्
ओ बन्निमवतरिसिमी मृत्कला प्रतिमेवोळ
चित्कला प्राणं प्रतिष्ठितम् तानप्पवोल् ।'

अलौकिक नित्य सत्य का, सुनो
सत्यस्य सत्य कथन है यह
कवि 'कुवेंपु' का निर्माण किया महाछन्द को
मेरुकृति ने जगद्भव्य रामायण ने
पधारिए, आशीर्वचन दीजिए
जन्म लेकर पुण्यकृति के रस कोप में
उतरिए नित्य रामायण के, ऐ दिव्य चेतन,
वागर्थ रथ पर आरूढ़ हो कर आइए
भावाग्नि पथ से, सच्चिदानन्द की पूजा
कीजिए, सहृदय भक्ति नैवेद्य लाइए
पाठक श्रोताओं को देने चित्कान्ति
कहानी से आकृष्ट हो कर नित्य शक्ति
रस रूप से उतर के मनोमय में
प्राणमय के द्वारा अन्नमय में आये—
श्रीराम जी उस लोक से उतर के
यहाँ इस लोक की भूमि सुता
सीता के साथ विवाह किया—
इस बहाने से मृच्छक्ति का मन्थन
हुआ, चिच्छक्ती का संवर्धन भी
हमारी मर्त्यप्रज्ञा है रावण की अविद्या
अन्धकार से अपनी मुक्ति पाती है
आप की दैवी प्रज्ञा चढ़ेगी अमृत-गोपुर पर
आइए, पधारिए इस मृत्कला प्रतिमा में
लगे चित्कला, प्राण प्रतिष्ठित हों।'

अयोध्या संपुटम्

संचिके १

कविक्रतु दर्शनम्

श्री राम कथेयम् महर्षि नारद वीणेयिम
केळदु कण्दावरेयोळश्रुरसमुगुवन्नेगम्
रोमहर्षम्दाळदु सहृदयम् वाल्मीकि ताम्
नडेतंदनात्मसुखी, केळ्, तमसा नदी तटिगे,
तेजस्वी, तरूणम्, तपोवल्कल वस्त्रशोभि.
मुम्बिसिल होम्बण्णमम् मिन्दु कळकळिसि
नगुतिर्द कान्तार-पंक्ती-विस्तारदलि
चैत्रऋतु पक्षिइन्चरवनास्वादिसुते,
तेळुगाळिगोय्यनेये निरि निरि विकंपिसुव
पटिक निर्मल नदिय पुलकित मुकुरदल्लि
मज्जनक्कुज्जुगिसि सलिलावगाहक्के
सोपानगळनिळिदु दिण्णेमळलम् दांटि
होळेव जीवनदंचनडिगळिगे सोंकिसिरे
केळ्दत्तदोन्दु रतिसुख चारुनिस्वनम्
गगनवीणा तंत्रियम् मिडिद तेरनागला
हर्षचित्तम्, महर्षि, कण् सुळिदनागसके
कविपुंगवम् : कंडु नलिदुदु मनम् मिथुनमम्
दंपतिक्रौंचन्गाळा, नोडुतिरे, तेक्कनेये
गाळिवट्टेयोळाडुतिर्दा विहंगमगळलि
गन्डुकोंचे ओरलदु दोप्पने नेलक्कुरुळ्दु
पोरळ्दुदु. कारिदत्तेर्देगे चुच्चिद सरळ्
नेत्तरम्, जोकोंवियंतेवोल्,हुदुगिर्द

संचिका १

कविक्रतुदर्शनम्

श्रीराम कथा सुनी ऋषिवर नारद की वीणा से
आनन्दाश्रु वहते रहे नयन-कमलों से
आत्मानन्द-लीन चल पड़े ऐसी अवस्था में
सहृदय मुनिवर वाल्मीकि तमसा के तट पर,
तेजस्वी, युवक, तपोवल्कल-वस्त्रशोभी.
वालसूर्य के सुनहरे किरण-शोभित कान्तार में,
वसन्त-ऋतु सूचक पक्षी कूजन सुनते-सुनते,
मन्दानिल-कम्पित-लहरि-सरिता के
स्फटिक-धवल-पुलकित-दर्पण से
पानी में हुई इच्छा स्नान की।
सीढ़ी उतर के चले वालू पर मुनिवर
पैर रखा पानी में, सुना उतने में ही
पक्षियों का निनाद शृंगार-सुख-विनोद
लगी गगनवीणा की स्वर लहरी सी
हर्पचित्त मुनिवर ने ऊपर आँखें उठायीं
देखा क्रौंचमिथुन, भरा मन संतोप से,

तुरन्त आवाज़ उठी, उड़तें क्रौंचमिथुन में
पति गिरा भूमि पर मर्माहत वाण से
लगा पिचकारी से रक्त निकला वेग से

ह्रोदेयिन्दे कारोडल विल्लवनुरदे चिम्मि
तुडुकिददम् मांसदोलविन्दे, कोंचेवेण्
विसुनेत्तरोळ नांदु, पोळ्मरळ् पुडियोळ्
पोरळ्दु, वियदन कैगे सिलुकिदिनियाण्मनम्
कन्डु चीदर्दुदय् चक्रगतियिम् पार्दु,
गिरिवनाचिच्येतनमे चीत्करिसुवन्ते.
करगितंतेये करुळ् मुनिगे. कण्वनियुण्मुवोल्
वेदनेय कर्मुगिल् तीविवरे हृदयदोळ्,
मरुगिदनु ऋषि, मनके मिंचला तन्न पूर्वम्.

वाळ्गव्वदोळ् करुणे ताम् बेनेगुदिदोडमल्ते
मेरेदपुदु पोरपोण्मुता महाकाव्य शिशु ताम,
चारु वाग्वैखरिय छन्दश्शरीरदिम् ?
फुरितु मरुगिदर्नितु कोंचेगुलि व्रियदंगे :
"माण्, निपादने, माण् ! कोले साल्गुमय्यो माण् ।
नलियुतिरे वान् वनद तोरे मलेय भुवनकवनम्
सुखद संगीतके विषादमम् श्रुतियोड्डि
केडिसुवय् ? नानुमोर् कालदोळ् निन्नवोले
कोलेय कलेयल्लि कोविदनागि मलेतिर्द्नय्
नारद महाऋषिय दये कणा करुणेयम्.
कलितेन् ?" येंदात्मकथेयात्म तत्ववनोरेदु,
कब्बिलगे वगे करगुवन्ते वोधंगेय्दु,
कृपेदोरुतातंगहिंसा रुचियनित्तु,
कोंचेवक्किय मेय्यिना वाणमम् विडिसि,
प्राणमम् वरिसि संजीव जीवनदिन्दे,
तविसि पेण्वक्कियोडलुरियना वाल्मीकि
तमसेयिम् तम्नेलेवनेगे मरळ्दु, घ्यानदोळ्
मुळुगिरल् मिंचितय् काव्य दिव्य प्रज्ञे
नवनवोन्मेष शलिनि, नित्यता प्रतिभे

था काला शिकारी पेड़ के पीछे
कूद पड़ा बाहर पक्षी-मांस के लोभ से
क्रौंचमिथुन में पत्नी दुःखतप्त चिल्लाती
रुधिरसिक्त हो कर बालू में गिरी
व्याध के हाथ में प्रियतम को देखते ही
लगा गिरि-गह्वर चैतन्य सब काँप उठे
मन पिघला मुनि का, निकले आँसू आँखों में
जुटे थे वेदना के काले बादल हृदय में
दुःखतप्त बना मुनिवर याद आयी पुराकृत की.

जीवन काव्य में करुणा जब प्रसव पाता
तभी जनमेगा न महाकाव्य का शिशु
सुन्दरतम छन्दःशरीर युक्त वाणी में ?
घातक व्याध के प्रति प्रकट किया दुःख
कहा मुनिवर ने, "नहीं, निषाद, मत मारो,
गिरिधरा-कानन-नदियों के निस्वन रूपी
संगीत में क्यों मिलाते हो विषाद-श्रुति ?
मैं भी था किसी समय तुम्हारी ही भाँति
हनन-कला में कोविद था, गर्व भी था
मुनिवर नारद की कृपा है बड़ी
समझ लिया करुणा क्या चीज़ है"
अपनी कथा सुनाई अपना तत्त्व भी ।
हृदय-द्रावक उपदेश दिया व्याध को
अहिंसा की गरिमा बतायी, कृपा से
क्रौंचपक्षी की देह बाण विमुक्त की
प्राण संचार हुआ पक्षी में संजीवनी से
युगल की पत्नी शान्त बनी मुनि-कृपा से
लौटे मुनिवर पर्णकुटी, ध्यानस्थ बने
झलक मिली काव्य की, दिव्य प्रतिभा की
नवनवोन्मेष-शालिनी है नित्यता प्रतिभा ।

होम्मिता दर्शनम् वर्गेगण्णे, चिम्मिदत्ती
वर्णनम् नालगेगे: पिडिवोलल्तादुदके
कन्नडियनप्पुदके मुन्नुडियनुलिवन्तेयुम्
कंड रामायणवनेल्लमम् कंडंते
हाडिदनो, केळ्द लोकंगळेल्लम् तणिववोल्.

तन्न लीला लोक लोकगंळम् सृजिसल्
अनादिकवि, परम पुरुषोत्तमम् सर्वेश्वरम्
वेरेवेरेय विश्व कविगळम् ब्रह्मर्कळ्म्
निर्मिपोल्, नम्मी चतुर्मुख जगत्कर्तृ ताम्
तन्न लीलेय काव्य सत्तेय वृहत्कृतिगळम्
सृष्टिसे वसुन्धरेयोळन्तेये कवींद्रर्कळम्
पुट्टिपन् ब्रह्म कृतियोळ् सच्चिदानंदमम्.
व्यक्तगोळिपंतुटा अव्यक्त परम तत्वम्,
वरकविय काव्य सत्तेयोळात्मरससत्यमम्
प्रकटिसुवनी ब्रह्मनन्य विधर्दिन्देम्म
मर्त्य पृथवी तत्त्वदोळ् प्रकटनासाध्यमम्
अनिर्वचन वोध्यमम्, प्रतिमा विधानदिम्
रसश्रुपि प्रतिभान मात्रसंवेद्यमम्.

ब्रह्म सत्तेयना परब्रह्म सत्तेयिम्
मात्रमेये दर्शिसुतिदम् मिथ्येयेंबुदेम्
पूर्ण सत्यमे ? योगविज्ञानमोप्पदु कणा !
पूर्णमदु; पूर्णमिदु; पूर्णदिम् वंदुदी
पूर्णमा पूर्णदिम् पूर्णमम् कळेदोडम्
पूर्णमेये तानुळिवुदा प्रज्ञेगदुविदुम्
सर्वमुम् सत्यदाविष्कार विन्यासगळ्
काव्य सत्तेयनन्य सत्ता प्रमाणदिम्
परिकिसल् मिथ्ययल्लदे तनगे ताम् मिथ्येयेम् ?
कवि कृतियुमा ब्रह्मकृतियंते ऋतचिद्

हुआ अन्तरंग में दर्शन उस का,
मिली वर्णनशक्ति जिह्वाग्र को,
आगत का दर्पण, अनागत का प्रस्ताव
दर्पण में प्रतिबिम्ब जैसी मिली दिक् सूची
जो देखी रामायण की कथा पूरी, गायी
गान-सुधा पी कर लोक सब सन्तुष्ट हुए

अपनी लीला से लोक लोक का सृजन करने
अनादि कवि परम पुरुषोत्तम सर्वेश्वर
जैसा विश्व-कवि ब्रह्मों को अलग सृजेगा
वैसा चतुर्मुख जगत्कर्ता भी हमारा
अपनी लीला की बृहत्काव्य रचना करने
निर्माण करता कविगण भूतल में।
ब्रह्म कृति में सच्चिदानन्द जैसा मिलता
वैसा अव्यक्त परमतत्त्व मिलता
वर-कवि रचना में, आत्मरस सत्य मिलता
प्रकट कराता ब्रह्म और ढंग से
इस मर्त्य पृथ्वी-तत्त्व में उसी को
जो सत्य प्रकट नहीं होता, है अबोध्य भी
है साध्य किन्तु रस-ऋषि की प्रतिभा में।

ब्रह्म-शक्ति प्रकट होती परब्रह्म शक्ति से
सत्य है किन्तु यह मिथ्या कहलाती है
है क्या यह पूर्णसत्य ? योग-विज्ञान में नहीं;
वह है पूर्ण, यह भी, पूर्ण से पूर्ण ही निकलेगा
पूर्ण से पूर्ण काटे,पूर्ण ही रहेगा
प्रज्ञा के लिए सब है सत्य-आविष्कार
काव्यशक्ति यदि तोले अन्य शक्ति से
लगेगी मिथ्या ? किन्तु अपने में ही ?
कवि-रचना भी ब्रह्म-रचना की भाँति
ऋत चिद्विलास है प्रकृति-लोक जैसा

विलासमा कृतिलोकमीं प्रकृतिलोकदोळे
वहुलोक किरणमय सत्य सूर्योत्तमन
चित्प्रकाशनदोन्दु रसलोकरुप किरणम्.
संभविसि भवकिळिदु वाणीपतियं कृतिय
विभवगळननुभविसुवोलुण्ववोल् काण्ववोल्
काणवेळ्कुम्, पोक्कु कृतिनेत्र पथदिम्
कवीन्द्र मति लोकदोळ् पोळेव ऋतकल्पना
मूर्तगळम्, भावचर नित्य सत्यंगळम्.

रारुवेनु वाग्देवियमृत रसनेय लसन्
नावेयम्. रामन कथेय मधु धुनी पथम्
पिडिदाम् महाछन्द्स् तरंगविन्यासदिम्
सेरुवेनु गुरु कृपेयोळा ऋतचिद् रसाब्धियम्.
नीडदोळ् वळेदु, काडिनलि हाराडिदा
गरुड शिशु, गरि वलितमेलल्पदेशंगळम्.
चरिसि तणिवुदे ? वियद् विस्तीर्णमम् वयसि
कैकोळ्वुदाकाश पर्यटनमम्. किरुमीन्गे
केरे कोळम् पोळे साल्गुमा तिमिगे वेळ्कुम्
जलक्रीडेगा रुन्द्रसागर सलिलविस्तार.
व्योम सागर समम् निन्न रामायणम्,
गुरुवे, रस ऋषियें, ओ वाल्मीकि. क्रमिसल्कदम्
दयेगेय्यनगे वैनतेयन वज्रवीर्यमम्
कलेयनल्लदे शिल्पि शिलेयनेम् सृष्टिपने ?
तनु निन्नदादोडम् चैतन्यमेन्नदेने,
कथे निन्नदादोडम्, नीने मेणाशीर्वदिसि
मतिगे वोधवनित्तोडम्, कृति नन्न दर्शनम्
मूर्तिवेत्तोन्दमर काव्यदाकृतियल्ते ?
पंजरद पळमेयोळ प्राण नवपक्षियम्,
विग्रहके देवतावाहनम् गैववोल्,

वहु लोक किरणमय सत्य सूर्य का
चित्-प्रकाशन का रसलोक किरण है
जन्म लेकर मर्त्य में वाणीपति ब्रह्म की
रचना संपत्ति का रसास्वादन करें, देखें
रचना रूपी आँखों से कवि लोक की
मूर्त ऋत कल्पना भावचर नित्य सत्य भी.

वाग्देवी की अमृत जिह्वा-नौका पर आरूढ़
राम-कथा के मधु-धुनी पथ से छन्दोरूपी
तरंग-विन्यास के सहारे पहुँचता हूँ
गुरुकृपा की गरिमा से ऋतचिद्रसाब्धि में
वढ़ा नीड़ में, उड़ा कानन के विस्तीर्णों में,
गरुड़-शिशु, कैसी तृप्ति पायेगा
यहाँ वहाँ उड़ कर ? चलेगा वियद्विस्तीर्ण में
करेगा पर्यटन सारा; मछली छोटी
चलती तालाव में, किन्तु तिमिंगल ?
सागर का सलिल विस्तार ही चाहता वह
व्योम-सागर की भाँति है तेरी रामायण
ओ गुरु, रस-ऋषि वाल्मीकि, उस पार
जाने में, वरसा दो कृपा से वैनतेय वज्रवीर्य
क़ला की निर्माता है शिल्पि, शिला की नहीं
तनु है तुम्हारा किन्तु चैतन्य मेरा
कथा तुम्हारी ही किन्तु आशीर्वचन से
मति गति दो, कृति में होगा दर्शन
फिर वनेगी मेरी अमर काव्य-कृति
पिंजरा पुराना किन्तु पक्षी नया
विग्रहों में देवता का आवाहन जैसे,

भक्तियिदाह्वानिपेन्. कविगुरुवे नीडेनगे
वाङ्मन्त्र शक्तियम्. सावधानदि तेल्दु
सागुवेन्. तेरेंतेरेयनेर्दु, रसमम् पीर्दु
सागुवेन्. गुरियेंतुटन्तेवोल वट्टेयुम्
वल्लेन् सुभगमेन्दु. रामन किरीटदा
रत्नवणियोले रम्यम्, पंचवट्टियोल्
दिनेशोदयद शाद्वलद पसुर्गरुकेयोळ्
तृणसुन्दरिय मूगुतिय मुत्तुपनियन्ते
मिरु मिरुगि मेरेव हिमविन्दुवुम्. रसयात्रेयम्
कैकोण्डेनय्. वारय्, तन्दे, कैहिडि, नडसु
निन्नणुगनी कन्दनम्. मणिवेनिदो निन्नडिगे :
कृपेदोरु; ओलिदेत्तु, हरकेगेय् देवकवि,
नन्ननोय्यने काव्य विद्युद् विमानदोळ्
निरिसि, सरसतियनेन्नात्म जिह्वेगे वरिसि.

वाळु, वीणापणि वाळु ब्रह्मन राणि;
गानगेय्, हेळु, ओ भावगंगा वेणी.
नंदनदि तुम्बियोंकृति तुम्बि मोरेवोन्तेवोल्
कर्णाटकद जनद कर्णवीणा तुम्बि
निन्न वाणिगे विकम्पिसि जेजेंकृतिय वीरि,
रसद नवनीतमम् हृदयदि मथिसुवन्ते
गानगेय, हेळु ओ भावगंगा वेणि.
तोडिदरे निन्नुसिर्, मद्दिगे किडि तगुळदु
होम्मुवन्ददि जोति, जडवे चिन्मयवागि
चिम्मिदपुदय्. मुट्टिदरे निन्न मेय्, रामांघ्रि
सोंकिदोडनेये कल्लु कडुचेलवु पेण्णगि
संभविसिदोल्, पंकदिम् कलापंकजम्
कंगोळिपुदय्, भुवन मनमम् मोहदिन्दप्पि
सेळेदु. निन्न कै पिळिये कब्बिणदिन्देयुम्

भक्तियुक्त मैं प्रार्थना करता हूँ
कवि गुरु वाङ् मन्त्रशक्ति दो मुझे
सावधानी से चलता हूँ लहरियों पर,
रसग्रहण करता हूँ
साव्य जैसा सावन भी सुलभ होगा
राम-मुकुट के रत्न की भाँति अतिरम्य
पंचवटी के बाल-सूर्य प्रकाश में चमकता
हिम-बिन्दु जो लगता तृण सुन्दरी के
नासिकाभरण की भाँति अतिरम्य
रसयात्रा पर चला हूँ, आओ पिता जी
अपने बेटे का हाथ पकड़ कर चलाओ
नमन करता हूँ तेरे चरणों पर देव कवि,
कृपा बरसाओ, ऊपर उठा लो
रखो मुझे काव्य विद्युद्-विमान में
रखो सरस्वती को आत्मजिह्वा में

जुग-जुग जीवो वीणापाणि सरस्वती
गाओ ब्रह्म की रानी भाव-गंगा-वेणि
नन्दन में मधुप गाते जैसे आनन्द में
कर्नाटक की जनता की कर्णवीणा भरे
तुम्हारी वाणी से कम्पन हो झंकार उठे
रसनवनीत निकले हृदय-मन्थन से
गाओ गाओ वाणी भाव-गंगा-वेणि
तुम्हारा श्वास लगे, जड़ बनता चिन्मय
आतिशबाजी में चिनगारी लगे जैसे
तुम्हारा स्पर्श हो, मोहित होगा भुवन
रामचरण-स्पर्श से जैसी शिला-रमणी
पंक में भी निकलता जैसे मोहक पंकज
तुम्हारा हाथ लगे निकलेगा लोहे से भी सुधा,

पोरसूसिदपुदु कब्बिन रसम्. मन्त्रमयि
नीम वडियें वंडेयुम नीरिनोल्वुग्गेयम्
होम्मि चिम्मुदल्ते मुत्तु चिप्पोडेवन्तेवोल्
विरिदु. ऋनचित् तपोवलकेल्ले तानोळदे
पेळ् कलालक्ष्मि ? कृपेगेय् ताये, पुट्टनम्
कन्नडद पोससुग्गि वनद ई परपुट्टनम्

होमरगे वर्जिलगे डाण्टे, मेण् मिलटनगे
नारणप्पन्गे मेण् पंपनिगे, ऋषिव्यास
भास भवभूति मेण् काळिदासाद्यरिगे,
नरहरि तुलसीदास मेण् कृत्तिवासादि,
नन्नय्य फिर्दूसि कम्वारविन्दरिगे,
हळवरिगे होसवरिगे हिरियरिगे किरियरिगे,
काल देशद नुडिय जातिय विभेदमम्
लेक्किसदे जगती कलाचार्यरेल्लर्गे,
ज्योतियिर्पेडेयल्लि भगवद् विभूतियम्
दर्शिसुते, मुडिवागि, मणिदु कैजोडिसुवेनाम्.
लोक गुरुकृपेयिरलि लोक कविकृपे वरलि;
लोक हृदयद वयकेयाशीर्वादिवैतरलि
मणिदिरलि मुडि, मत्ते मुगिदिरलि कय्; मत्ते
मडियागिरलि वाळ्वे, जयिसुगे रसतपस्ये,
दोरेकोळ्ळुगे चिरशान्ति; सिरिगन्नडम् गेल्गे !

देश कोसलमिहुदु घनधान्य जन तुम्बि
सरयू नदिय मेले. मेरेदुदु विषयमध्ये
राजधानि अयोध्ये, रमिसुविद्रिय सुखद
नडुवणात्मानंददन्ते. पेळेवेना
पवित्तदर जसम् राका शशांकनिम्
पर्वितेने बेळ्दिगळोळ्पिन सोदेय सोने,
लोकत्रयंगळम्. रचिसिदनु मनु ताने

मन्वन्तरी स्पर्श से शिला से निकलेगा पानी
जैसे निकलता मोती सीपियों से रसबिन्दु
तपोवन के वक्ष में दीना आयेगी कला लक्ष्मी
कृपा करो माँ इस सूने पर
कलह वन विस्तार की कोंपल पर

होमर, ह्विटमन, दान्ते और मिल्टन,
नारायण और पम्प, व्यास-ऋषि
भास, भवभूति, कालिदासादिकवि
भर्तृहरि, तुलसीदास कृत्तिवास
नरस्य, निराली, कम्ब और अरविन्द को
पुराने और नये, बड़े और छोटे
काल देश भाषा-जाति भेद सब
हटा दिये—नमन करता हूँ सब को
जहाँ जहाँ ज्योति है भगवद्-विभूति
लोक गुरु, लोक कवि, कृपा रहे
लोक हृदय की इच्छा आशीर्वाद बने
नत रहे शिर, मुकुलित रहे कर
पावन रहे जीवन, जय हो तपस्या की
सिद्धि चिरशान्ति, जय हो कदल-श्री

कोसल देश है जन, धनधान्य से भरा
सरयू के तट पर, है देश की राजधानी
अयोध्या, विषय सुख मग्न के आत्मानन्द-सी
कीर्ति उस की फैली थी, त्रिलोक में भी
पूर्णचन्द्र की चाँदनी की शोभा जैसी

नाल्कुमडियैदु योजनदगलदा महा
साकेतनगरियम् रविवंशदरसरिगे
कीर्तिय किरीटविड्डवन्ते. तवरूरेनिसि
सिरिगे विज्जेगे कलेगे बीरका पत्तनम्
मनेगळिन्दरमनेगळिन्दापणगळिन्दे,
हेद्दारियिकेलदोळिर्प साल्मरगळिम्
निच्चमुम् मळेगरेव हूविनुदुरुगळिन्दे,
सुन्दर सुसंस्कृत लतांगियर सिरिगैय
होंगोडद पन्नीर तुन्तुरेरचुगळिन्दे
तळिर तोरणदिन्दे, कप्पुरद कम्मनेय
रंगवल्लिय ललितकलेयिन्दे, कोरळिचरदि
पक्किगळनणकिसुव नल्मवकळिन्दमा
सग्गदूरने सूरेगोडन्ते मेरेदुदय्
निच्चसोगदावासदोल्. चक्रवर्तियदक्के
दशरथम्. दोरे सग्गदोडेयंगे. इक्ष्वाकु
रघु दिलीपर कुलपयोधिय सुधासूति.
राजर्षिया दीर्घदर्शिया समदर्शि ताम्
जन्म कुल धन जाति वर्ण प्रभेदमम्
गणिसदेये, मनद हृदयद धर्म कर्मवने
हिडिदु मन्नणेमाडि, नीचोच्च भिन्नमम्
स्पर्धे वैरंगळ्म् तोडेदु, समवुद्धियिम्
दर्पदिम् पालिसिर्दनु तन्न राज्यमम्,
सर्व प्रजामतके तानु प्रतिनिधियेम्व
मेणवर हितके होणेयेन्देम्व वुधरोलिद
समदर्शनवनोप्पि

सिरियनितुमिर्दोडम्
अरमुडिगे नरेनविर वेळ्ळिगेरेयेर्दोडम्
देवि कौसल्येयम् सव्वी सुमित्रेयम्

विस्तृत महा साकेत नगर की रचना की
मनु-ऋषि ने, रविवंश नृपति कीर्ति मुकुट की ही
उगम स्थान रहा वह श्री-सरस्वती का
कला, शौर्यादि का गृहराजगृह आपणों से
राजमार्ग-स्थित-वृक्षराजियों से
सतत बरसाने वाली फूलों की वर्षा से
सुन्दर सुरुचिर ललनाओं के हाथ के
स्वर्ण-कुम्भ के सुगन्धोदक-सिंचन से
कृतालंकारद्वारों से कर्पूर शोभित भूतल से
बच्चों की बाल-सहज सुललित वाणी से
लगती स्वर्ग से अधिक मनोहर अयोध्या
नित्य सुख का आवास बनी अयोध्या

चक्रवर्ती दशरथ, इन्द्र का भी प्रभु वह
इक्ष्वाकु रघु दिलीप कुल पयोधि सुधा
था वह राजर्षि दूरदर्शी समदर्शी भी
जन्म कुलधन जाति वर्ण प्रभेद सब हटे
नीचोच्च भेद ईर्ष्या शत्रुता भी हटे
मन की विशालता धर्म-कर्म की महिमा बढ़ी
समबुद्धि से शासन किया दशरथ ने
बुधमान्य समदर्शन को स्वीकार किया
प्रजा-हित के रक्षक बने वह प्रतिनिधि

बड़ी थी लक्ष्मी-कृपा फिर क्या ?
रजत-रेखा झलक रही थी बालों में
देवी कौशल्या थी साध्वी सुमित्रा भी

चेल्वु'म वेत्तिर्दुदेने मेरेव कैकेयम्
मूवरम् नलवेंडिरम् कामदिम् प्रेमदिम्,
मदुवे निंदिर्दोडम्, निडिदु पार्दिर्दोडम्,
वंशकर सन्तानमम् काणदा नृपति
तानोर्मे तिरुगुतिरलरमनेय सिरिदोंटदोळ्
मरिय तेरेवायिगिडुते तन्न कोक्कम्; कुटुकु
कोडुतिर्द ताखक्कियम् कंडु, कण् नट्टु
काल्नट्ट निन्दनु मरंवट्टु. मक्कळम्
पडेद पक्किय सिरितनम् चक्रवर्तिगे तन्न
वडतनवनाडि मूदलिसितेने, करुवि कुदिदन्
कोसलेश्वरना विहंगम सुखके कातरिसि.
देवतेगळाशितमो ? ऋतचिदिच्छेयो ? विधियो
पक्कि गुव्वच्चियादोडमेम् ? विभूतियम्
तिरेगेकरेवासेयम् केरळि सिदुदा दोरेय
हृदयदलि ! ऊर्ध्वलोकद देव शक्तिगळ्
संचु हूडिदरेनल्, चरिसिदत्तवरिच्छे
मुदुकनेर्देयलि मक्कळाशेवोल्. उद्यानदिम्
नेरमरमनेगेय्दि पुत्राभिवांछेयति
चिन्तेइम् बरिसिदन्, नुडिसिदन् गुरुगळम्
वामदेव वसिष्ठरम्. करेसिदनु कूडे
सचिवरम् मन्त्रपाल सुमन्त्ररम्. तन्न

बाळ्वयकेयम् पेळ्दनिन्तु 'गुरुगळिर. केळिम् :
नन्नेर्देय सिरिय होंगळसदलि बिरुकोडेदु
सोरुतिदे बरिदे जीवामृतम्. बाळ्वेय सोडर्
तानार्व मुन्नमिन्नांदु बात्तिय कुडिगे
दीपांकुरंगैदु पोत्तिसदे पोदोडाम्
नेलदरिके नेसर्बळिगे कळ्तलेयनडिकि
पोदन्तुटल्ते ? मक्कळम् काणदी कण्

मूर्तिमती सौन्दर्य की कैकेयी थी
काम से या प्रेम से इन देवियों से
किया था विवाह दशरथ ने, किन्तु····?
वंशवृद्धि को सन्तान नहीं मिली
राजभवन के उपवन में घूमते किसी दिन
देखी दशरथ ने एक चिड़िया
चोंच रख कर बच्चे के मुँह में
दे रही थी घूँट वह प्यार से
दृष्टि लगी उसी पर, पैर चिपके वहीं
खड़ा रहा स्तम्भ की भाँति वहाँ ही
माँ चिड़िया ! उस का सौभाग्य कितना !
लगा वह हँस रही थी राजा की विवशता पर
कोसलाधिप तड़पता था विहंगम् सुख के लिए
देवों का उद्देश्य ? या ऋतिचित् की इच्छा
या विधिलिखित ? विहंगम चिड़िया ! किन्तु
विभूति को भूतल पर बुलाने की इच्छा
जगा दी राजा के हृदय में चिड़िया ने
ऊर्ध्वलोक की देवशक्ति ने षड्यन्त्र रचा
इच्छा उन की प्रबल बनी, वही थी
आशा सन्तान की बूढ़े दशरथ की
घर चले सीधे, चिन्ता थी बड़ी
पुत्रकामना की, सोचा गुरुजनों से
वामदेव वशिष्ठों से, सचिव मन्त्रपाल
सुमन्त्र सब जुटे, बता दी
राजा ने अपने जीवन की इच्छा

"गुरुजन मेरे हृदय का स्वर्णकलश
कहीं टूटा है गलता व्यर्थ जीवामृत
जीवन का प्रदीप बुझ जाने से पहले
दीप उस का यदि नहीं बनता मेरा
लगेगी भूतल की इच्छा डरकर
अन्धकार से सूरज के पास गयी हो

हृत्तापदिम् सीदु कुरुडाय्तला : मनद
मामरके हिडिदिहुदु ननगे निर्विण्णतेय
बन्दिळिके. रुचिसदु विहंगमगळिचरम्
सोगयिसदु मामरम् शोभिसदु केन्दळिर्
पसुळेय विलासदिम् शिशुविलासवनेन्न
नेनहिगिरदोय्दु कदडुवुदेदेगे कडेगोल्
इडुववोल् सोगयिसदु ननगिन्दु चेल्वावुदुम्
पगलिरुळ् रविशशिगळुदयास्तमिन्द्रधनुगळ्
सर्वसौन्दर्यामृतम् मृतदन्तिहुदु ननगे
नीरसम्. शवद सिंगारदन्ददोळेनगे,
मक्कळिल्लद दोरेगे, नृपसम्पदम्. कुरुडनुम्
कन्नडिगोडेयनाद मात्रदिम् काण्बनेम् ?
बाळ्गे कण्णन्तिर्प कन्दरम् पडेवोन्दु
देववट्टेयनुसिरिमेनगे, ओ बन्धरिर;
तविसिमेन्नेदेयग्गियम् वरिसि सुग्गियम्".

कूरळ्ळ होरेवोत्त दोरेमोरेयनालिसुते
गुरु वसिष्ठम् पुत्रकामेष्टियम् पेळदु
पुत्र सन्तानमहुदेन्दु नंबुगेगोट्टु
संतैसि यज्ञ शालेगे नडेदनल्लिंदे
केळ्ददम् कृतघी, विचारमति, गुरुवरम्
जाबालि ऋषिवरेण्यम् बरुत्तायेडेगे
पेळ्दनिन्तेन्दुः "रघुकुल वार्धिचन्द्रमने,
कुल पुरोहतरोरेद जन्नमम् कैकोंडु
पसुळेरन्नर पडेवेयदु दिटम्. केळादोडम्
नन्नोंदु काण्केयम्. पूर्व पद्धतिविडिदु
माळ्प दिग्विजय हयमेध मोदलादुवम्
तोरेदु, हिंसा, क्रौर्यमिल्लिदिह प्रेमक्के
नोन्तु, देवर्कळम् पूजिसल् मेच्चुवुदु

पुत्रदर्शन नहीं पाकर, हृत्ताप से
आँख मेरी डूब गयी, अन्धा बना मैं।
मेरे मन के आम्रवृक्ष को लगी बीमारी
रस नहीं विहंगमों की मीठी आवाज़ में,
आम्रवृक्ष के सौन्दर्य में रुचि नहीं,
अंकुर में शोभा मुझे नहीं भाती।
बच्चों का विहार याद दिलाता मुझे
शिशु विलास का, हृदय मन्थन दण्ड वह
दिन-रात, सूर्यचन्द्र का उदयास्त
इन्द्र-धनुष—सब का सौन्दर्यामृत
सब नीरस, मृत है, शव-शृंगार है
पुत्र के बिना यह सब राज-वैभव
क्या लाभ यदि अन्धा स्वामी हो दर्पण का ?
जीवन की आँख है पुत्र; प्राप्ति का
देवमार्ग दर्शन कराइए गुरुजन,
आनन्द भर के हृदय ताप बुझाइए"

प्रभु के दुःखभार की बात सुनी
वशिष्ठ जी ने, बता दिया विश्वास भर के
"पुत्रकामेष्टि यज्ञ फल है पुत्र-सन्तान,"
फिर चले यज्ञशाला के प्रति :
सारी बातें जानकर, मुनिवर जाबालि।
आये दशरथ के पास, कहा भी
"रघुकुल वारिधि चन्द्र, कुलगुरु वशिष्ठ की
बात ठीक है, यज्ञ करो प्राप्त होगा
पुत्ररत्न; फिर मेरी देन है
दिग्विजय अश्वमेध का पुरातन मार्ग छोड़ो
हिंसा क्रूरकर्म छोड़ो, प्रेम भक्ति से
देवता की पूजा करो, सन्तुष्ट होंगे
जग के शासनकर्ता ऋत भी।

जगवनाळुव ऋतम्. नेलदल्लि बानल्लि,
कडलु काडुगळाल्लि पक्किमिग-पुल्गाळलि
आर्यरलि मेण् अनार्यरलि केळ्, विश्वमम्
सर्वत्र तुम्बिदन्तर्यामि चेतनम् ताम्
प्रेमात्मवागिर्पुददरिन्दे हिंसेयिम्.
प्रेममूर्तिगळाद सन्तानमुदिसदय्
राजेन्द्र, केळ्, प्रेम-साक्षात्कारमागिर्प
ऋष्यश्रृंगादि मुनिगळनिल्लिगाव्हानगेय्
मखशालेयम् रचिसि यज्ञकुण्डम्गेदु
विश्वशक्तिस्वरूपियनन्गियम् भजिसु नीम्
सात्विक विधानदिम्. प्रजेगळम् वडवरम्
सत्करिसवर्गे वर्गे, तणिववोल्. तृप्तियिम्
'दोरेगोळिळत्तक्के ! एन्दा मन्दि परसल्के
परकेयदे देवराशीर्वादकेणेयागि
कृपण विधियिम् पिंडि तन्दीवुदे निलगे
नेलदरिकैयोळ्मक्कळम्. जनमनद शक्ति
मेणवरभीप्सेये महात्मरम् नम्मिळेगे
तप्पदेळेतर्पुदु कणा !

ऋषियोरेद वेदमम्
केळ्दु पुलकितनागि दशरथम्, बाष्पमम्
सूसि, काल्गेरगि, सात्विक मख विधानमम्
नलिदु कैकोळलोप्पि, बीळ्कोट्टना ज्ञानियम्

समेदुदध्वरशाले सरयू तरंगिणिय
पच्चेय पसुर दडद मेले, चैत्रन कृपिय
कुसुम किसलय लता शोभितद रमणीय
गन्ध बन्धुर देव कानन निकेतनद
सिरिमाळ्केयिन्दे, मध्यदोळग्निकुंडदुरि
देदीप्यमानमादुदु, विपुल दूरदलि,

भूव्योम में, सागर कान्तारों में
पक्षि मृगवनस्पतियों में
आर्य-अनार्यों में—सभी में विश्वव्यापि
चैतन्य है प्रेममय; यही कारण है
हिंसा से प्रेममय सन्तान नहीं मिलेगी।
सुनो राजेन्द्र, ऋष्य-शृंग मुनिवरादि को
निमन्त्रण दो; प्रेम दर्शन प्राप्त है उन्हें
यज्ञशाला यज्ञकुण्ड की रचना करो
सात्त्विक रूप से विश्वशक्ति अग्नि की
प्रार्थना करो, निर्धनों की सेवा करो
तृप्ति पाकर कहे जनता, 'राजा की भलाई हो'
उन का आशीर्वाद है देवता का ही
वह लायेगा खींचकर सौभाग्य विधि से
तुम्हारे लिए, सन्तान प्राप्त होगी
जनता की इच्छा लायेगी भूतल पर
खींचकर महाजीवन, शंका नहीं"
मुनिवर की वातें सुन कर दशरथ
हर्ष पुलकित बने, वहे आनन्दाश्रु;
चरणों में नतमस्तक बनकर
सात्त्विक यज्ञ-मार्ग स्वीकार किया
कृतज्ञता से विदा ली मुनिवर से

रची यज्ञशाला सरयू के तट पर
हरे अंक पर नदी के, लगी वसन्त-ऋतु
कुसुम-किसलय-लताशोभित रमणीय
गन्ध-वन्धुर देव-कानन-निकेतन की
सम्पत्ति में अग्नि-कुण्ड की ज्वाला थी
देदीप्यमान मध्य में; लगती वह दूर से

दूरदर्शक यंत्रदक्षियोळ् कण्णिट्टु
गगन विज्ञानि ताम् रात्रि आकाशदलि
काण्वोन्दु तारागर्भदन्ते नेरेदुदय्,
मलेनाडिनलि मोदल मुँगारु मळेगरेये,
मरुदिनम् तोय्द कम्पिन नेलदिनुक्केद्दु,
साल्गोंडु लक्कलक्कंपरिदु, जेनिर्प
पुत्तुमम् मुत्तुवा कट्टिरुंपेय रासि
हिंडुगोळ्वन्तुटा देश देशद जनम्
कुतुरंगदोळ् विपुल संखेयलि कुदिगोंडवोल्
कडलायतु साकेतनगरि. तृप्तिये तणिदु
तेगिदुदेनल्के नलिदुदु, जनम् शारका
भोजनके मेण् दानदाक्षिणेगे. दारिद्र्य ताम्
श्रीयादुदेंवंते होन्न होरेयिम् वेन्ने
वागितु वडतनक्के. दोरेयिच्चे नेरवेरि
सोगवागलेंवा हरके जनद हृदयदिम्
जन्नवनेयिदेळ्व होमधूमंवोले
व्योमान्तरके पविदत्तु. सग्गवे मणिदु
तणिसदिरुवुदे तिरेयनतितीव्रदाकांक्षे ताम्
पिडिदु जग्गिसि सेळेये ? वहुजनर पेर्वयके
कल्पवृक्षद कोंवेयने कच्चि सेळेदिळेगे
फलदमृतमम् मळेगरेयदिहुदे ? जनमनमे
युगशक्तियल्ते ? ताना शक्ति मूर्तिगोळे
नामदन्नवतारमेन्दु पूजिपेवल्ते पेळ्
व्यष्टिरूपदिनिळिव सृष्टिय समष्टियम् ?

खड्गधारावृतवनान्तु दशरथ नृपम्,
तन्नवोले नारुमडियुट्टु नोंपिगे निन्द
दारेयर्वेरसि, तनुजात कामेष्टियम्
कैकोंडु ऋक्सामयजुरादि वेददिम्

दूरदर्शक में आँखें रख कर कोई देखे,
रात में गगन-विज्ञानी व्योम में जो
देखेगा उस तारागर्भ की भाँति
इकट्ठी हुई जनता देश-देशों से
यज्ञशाला में अत्यधिक संख्या में
उसी विध, जिस विध चींटियाँ
पहाड़ों में, प्रथम वर्षा के बाद
आर्द्र सुगन्धित धरती से उठ कर
इकट्ठी होती मधुमक्खी घर की तरफ़।
बुद्बुदायमान सागर बना साकेत
तृप्ति ने भी तृप्ति पायी; हर्ष भरी जनता
नत रही भोजन-दान-दक्षिणादि से
दरिद्रता का बना श्रीरूप, सुवर्ण भार से
नत रही देह दुर्बल : "सफल बने
प्रभु की इच्छा, सुख सौभाग्य मिले उसे"—
जनहृदय से निकली वाणी, भरी व्योम में
यज्ञशाला के होम-धूप की भाँति
स्वर्ग भी नम्रता से पूरा करेगा ही
धरती की प्रबल इच्छा को—
सारी जनता की उत्कट इच्छा, भूतल पर
नहीं खींचेगी क्या कल्प-वृक्ष-फल-वर्षा को ?
युग की शक्ति जुटी हुई है जन-मन में;
वह शक्ति जब मूर्तरूप धारण करती
उसी को अवतार मान कर पूजा करें
सृष्टि की समष्टि व्यष्टि रूप में आती।

अग्निधारा व्रत लिया दशरथ भूप ने

ओंकार स्वाहादि मन्त्रघोपम् वेरेसि
वेळ्व वेळंवदिम् जन्नकोंडम् वळसि
कविदिर्द ऋत्विजर गोष्ठियलि, देवरिगे
हवियनर्पिसुतिर्दनात्म भक्तिय तपस्
शक्तियिम् वर्यसि. मनदोले तनुजरेन्देंब
जाण्णुडियनरितुं, अल्पतेय भावगळम्
नेरे तोरेदु, गगनमम् पृथ्वियम् वार्धियम्
पर्वतारण्य विस्तार घोरोदात्त
गांभीर्यमम्, भद्र वीर सौन्दर्यमम्,
ध्यानिसुते, भाविसुते, रूपिमुते कामिसिदन
भूमिपम् तद्रूपगुण हृदयरम्.

नृपतिया
भावमहिमा ज्योति संचरिसिदुदु मिंचि
पट्टमहिषियरेदेंगळोळ्. कूर्मे वेसुगेयिम्
द्वैत तानद्वैतमप्पुदोन्दच्चरिये पेळ् ?
मैगळेनितादोडेनोलिदवर्गदु दिटम्
मन मोन्देयल्ते ?

सन्तानकमि वराधिपम्
तानिन्तुटोन्दु हुण्णिमेइरुळ्, तुम्बुपेरे
गरि-इगुर नोरे मुगिलिनंवरदोळिम्नागि
तेलि, सरयू नदिय सलिल वक्षस्थलद
रम्यद्रवीभूत दर्पणके ज्योत्स्नेयम्
पालु पोय्दन्ददलि चेल्लि राराजिसिरे,
वेळ्दिगळन्नींटि तेने तानुन्मोददिम्
हाराडि मीन्टुविरलाभ्रकाशमम्, पृथ्वि
निश्शब्दता सुप्तयल्लाळ्दु मोनमिरे,
ऋत्विजरोडने होमकुंडदेडे पूजेयोळ्
पुत्राभिवांछेय समाधियोळ् तानिरल्

पत्नियाँ भी चीर धारण कर व्रतस्थ रहीं
यज्ञ था पुत्रकामेष्टि का ! ऋक्-साम
यजुरादि वेदों के ओंकार स्वाहादि
मन्त्रघोष के बीच में, ऋत्विजों की गोष्ठी में
अग्नि-देव को अर्पण करता रहा हवि
आत्मभक्ति से, तपःशक्ति इच्छा से
जैसी मन की भावना वैसे पुत्र
ठीक ही समझा दशरथ ने, त्यज दी हीनता
भू-व्योम जलधि पर्वतारण्य-विस्तार
वीरोदात्त गाम्भीर्य, भद्र वीर-सौन्दर्य
—ध्यान किया इन का, तद्रूप गुण पुत्रों की कामना कं

भाव महिमा ज्योति ने संचार किया त्वरित
राजमहिषियों के हृदय में, प्रीति मिलन में
द्वैत भी अद्वैत बन गया, आश्चर्य क्या ?
देह कितने भी हों, मन फिर एक है न ?

पूर्णिमा की रात थी; तैरता था पूर्ण चन्द्र
हलके से मेघफेनावृत आकाश में निश्चिन्त;
सरयू के सलिल-वक्षस्थल पर फैली थी
चाँदनी रम्य द्रवीभूत दर्पण पर क्षीर की भाँति
चाँदनी खा कर चकोर उड़ रहा था
मोद से आसमान में, पृथ्वी थी
मौन की निःशब्द सुषुप्ति में
इस समय सन्तान-कामी धराधिप था
ऋत्विजों के बीच पूजारत होम धूम में
समाधिस्थ भी पुत्राभिवांछा से

नूर्मडिसिता अग्निकुंडदलि केंडदुरि
केरळि करगत्तलेय कळ्गन्त्रमम् सीळ्दु
कोटि मिंचुगळोम्मे मिंचिदुवेनल्के द्युति
पोण्मिदुदु, दिट्टि कोरै से ! संयमिगळुम्
वेंच्चि कण्णा गिरे, चिकीर्षेयावेगदा
वन्हि फणि लेलिह्यमान जिन्हेगळन्ते
वीळवाहुगतिगळम् नुंगि नोणेदोडनोडने
सिमिसिमिसि छटछटिसि धगधगिसुतुन्तेळ्
रक्ताग्नि तांडव ज्वाला जलद मध्ये
तानोर्वनल्लि मैं दोरिदनु झगझगिसि
केंडदुरिमेरेये मिंचिन दिव्य कान्तियलि
मूडु वानिन करेय कुंकुमद तीर्थदोळ्
मिंदेळ्व काल्गुण प्राभात रवियन्ते
मेरेंदुदु वदनमंडलम्. केसुरिय हरिय
रश्मि केसरगळेने मुद्रिसितु मंडेयम्
केन्नविर राशि. नक्षत्रमय रात्रियम्
धरिसि सूर्यने शोभिपन्ते, केंगिडिगळिम्
तुम्बिदंबरदंन्तेवोला होमधूममम्
नीलद दुकूलदवोलन्तु, पोळेदुदु कण्गे
मंगळदमर मूर्ति आ याजकर मुन्दे.
तस जांबूनदद दीसियनकवाडि
मिसुप मिसुनिय पात्रेयलि सुपायस रसम्,
कोदण्ड चन्द्रनलि पोन्नजोन्नद जलम्
पोळेवन्ते, तळतळ नलिदुकणिये, तोळ्नोडि
पेळ्दनाशीर्वादमम्, मन्द्र गम्भीर
दुन्दुभिध्वनि सभा निश्शब्दतेय मथिसि
पोण्मे: "सृष्टियशक्ति दूतनेम्, राजेन्द्र,
ऋतवचिन्मयी लीलेगाम् कविक्रतु कणा

अग्नि-ज्वाला शतगुण बढ़ी, चली उद्वेग से
काले घनान्धकार की शिला तोड़ कर
करोड़ों विद्युन्मालाओं की द्युति निकली,
आँख निस्तेज बनी, मुनिगण मूक बने
मनोवेग से वह्निफणि-लेलिह्यमान-जिह्वा से
निगलता था गिरती हुई आहुति सब
सिमिसिमि छटछट धगधग ज्वलन्त
रक्ताग्नितांडव ज्वालानल के बीच में
दर्शन दिया किसी ने लसन्मुद्रा में
शोभायमान देह विद्युत्-दिव्यकान्ति में
मुखमण्डल उस का वसन्त ऋतु के रवि का
जो नहा के आता पूर्व दिशा कुंकुम तीर्थ में
सिर के लालबाल लगे सिंह केसर के ही
मंगल अमलमूर्ति साकार था ऋत्विजों के बीच
लगा सूर्य नक्षत्रमय रात्रि को पहन कर आया
होमधूम सब नीलदुकूल में भर कर
लगा चिनगारी से भरा आसमान ही.
विद्युन्माला-दीप्ति का परिहास किया
लगा सुवर्ण भाण्ड में सुपायस जैसा,
कोदण्ड चन्द्र में सुवर्ण-चाँदनी-जल
भास्वत् देहयष्टि हर्षोद्रेक से
हाथ बढ़ा कर, मन्द गम्भीर दुन्दुभि ध्वनि में
सभा-शान्ति को भंग किया, आशीर्वाद में
कहा, "हूँ सृष्टिशक्ति का दूत राजेन्द्र
ऋतचिन्मयी लीला का कर्ता मैं

कोळ्ळिदम्, कामधेनुविन कोडगेच्चलम्
पाल्गरेदु गेय्द पायसमिदम्. मरुभूमि
नगुव नन्दनवप्पुदिदनोंटे, मेच्चितय्
निन्नो व्रतके ऋतम् पसुगे नीडम्शन्गळम्
सतियर्गे. गेल्वुदा विधिलीलेयुम्." कैमुगिदु
सोगद कडलोळगाळ्दु, दोरेयेळ्दिदिर्वोगि
"वयसुवेन् निनगे, पूज्यने सुखागमनमम्.
नडेवेनिदो निन्नाज्ञेयम्." एनुते अंजलि नीडि
दिव्य पायसपूर्ण पात्रेयम् विनयदिम्
कोंडु, बलवन्दु, मणियुत्तिरे, मरेयादुदा
देव तेजःपुंजमखमूर्तियग्गिमेय्

ज्वाला निमग्न मेनल्. कवि शैलदुन्नतिय
संजेगिरिनेत्तियोळ् कुळितु कवि नोडुतिरे
दूरद तरंगित दिगंतदलि चैत्र रवि
मुगिल नेत्तर्गेम्पिनलि मुळुगुवोलन्ते.
निर्मल शरच्चन्द्र किरणगळिनम्बरम्
प्रोल्लासगोळ्वन्ते, दशरथम् बगेयुवि
परियुतन्तःपुरके देवि कौसल्येयम्
कुरितुः "राज्ञि, कुसुम सुखमोदगिती मासरके.
मधु फलस्वादु सन्तोपमिदो, कोळ्ळिदम्
ऋतु मूर्ति दयेगेय्द पायसप्राणमम्.
नीनुमा निन्न तंगेयरिदम् पसुगेगोळ्ळिम्
कुलद मेण् क्रमद मर्यादेगळ् मेरेववोल्" !

पेरे तुम्बुवन्ददलि नवमास तुम्बिवरे,
श्री रामचंद्रनेंबळ्करेय होरेहोत्तु
वेळ्देरेय मुगिल हत्तिय तेळ्मडियनुट्ट
पूर्णिमा रजनियन्तेसेदळ्, कौसल्ये,
गंभीर सौन्दर्यदिम्. जोन्नवक्किर्येदे

लो कामधेनु के दुग्धामृत में
बनाया पायस, खाओ मरुस्थल
बनेगा नन्दनवन, ऋत्व तुष्ट हैं व्रत से
पत्नियों को दो इसी में हिस्सा
जय हो विधिलीला का," हाथ जोड़े
सुख-स्वप्न-रत दशरथ ने दिव्य
पुरुष के सामने, कहा, "सुस्वागत
देव तुम्हारा, आज्ञा तुम्हारी मान्य है"
हाथ बढ़ा कर दिव्य भाण्ड को लिया
विनय से, प्रदक्षिणा की विनम्रता से
इतने में अदृश्य हुई यज्ञमूर्ति
अग्निदेह ज्वाला में निमग्न हुई
—शैल शिखरस्थित कवि देखते हों
दूर तरंगित दिगन्त में वसन्त रवि
व्योम की रक्तवर्ण की लालिमा में डूबे वैसा

अमल शरत्चन्द्र किरणों से अम्बर जैसा
चमकता वैसा दशरथ भी उल्लास से
आये देवी कौशल्या के अन्तःपुर में
कहा, "राज्ञि यह आम्रवृक्ष सफल बना
स्वादु मधुफल है लो इसे सन्तोष से
यज्ञमूर्ति की कृपा से मिला यह प्रसाद
तुम लो बहनों के साथ पायस
कुल गौरवक्रम भी ध्यान में देवि लेना इस में."

चन्द्रमा जिस विधि पूर्ण बनता क्रमशः
वैसे नवमास होते ही श्रीरामरूपी प्रेमभार को
गर्भधृतकौशल्या लगी पूर्णिमा रजनी हो
धृतमेघ—धवल-दुकूल-धारिणी, सौन्दर्य में.

हिल्लोलवप्पन्ते पेचितरसन मनम्.
यमळ तारेगळिर्डुमोन्दे चुक्किय तेरदि
तोर्प नक्षत्रदोला सुमित्रादेवि
कंगोळिसिदळ् समुल्लासदिम्. कैके ताम,
राज खड्गवनान्तु मुत्तु केत्तनेयिन्दे
मिरुप चेंत्रोन्निनोरेयन्ते मिचिदळखि
पक्षियोलवळोडल कण्णिगण्णोळ सिलिक
तळ्ळंकगोळे दोरेंगे. मेण् पेळ्वुदेम ? पोंवळ्ळि
विगिदेळेदुदा स्त्रैणनम्, जेनुरुळगोळ्ळियोल् ।
दशरथ सतियरिन्तु तुम्बु वसिरिंदेसेये
नलिदत्तयोध्ये नलिदुदु पृथ्वी. नोमुंगिल्
तविसिदुदु बेसगेय बेगेयम्, पोसमळेय
सूसि, तंपिट्टिदु तीडिदुदेलर्. नेरेयेरि
तुम्बि तुळुकिदुवु तोरे. सरयू तरंगिणिगे.
हिमगिरिय दूरदिन्दतन्दुवेटेचिडदे
क्रौन्च सारस पंक्ति, हंस कारंड तति
नव वर्ष हर्षदुन्माद कलनाददिम्
तळिद तीवित्तट्वि. भ्रमर सम्भ्रमदिन्दे
झेंकरिसिदत्तु कुसुमित काननांतरम्
पोण्मिदुदु मैनविर तिरेवेंणलम्पिनिम्
पच्चने पसुर् गळकेयन्ते कलकंठनुलि
घोषिसितु जगके, रामागमन वार्तेयम् ।
भुवन सम्भ्रमदोडने तायदेंगे पालुकि
वरलोदिरुळ् कनसिनोळ् दुग्धाब्धियम्
कंडु नालिदळ् देवि कौसल्ये. चन्द्र शिशु
पाळ्देरेगळभदलि तेळ्दुदु मुगुळ्नगेगळिम्
मिंचि, मिरलिरे,पनुळे, तेलुते दडके वरे,
कैचाचि करेये कौसल्ये, सेन्दुटिय शिशु

दशरथ का मन फूल गया चकोर की भाँति
देवी सुमित्रा थी उल्लास में, लगी भी
द्वितारायुक्त नक्षत्र की भाँति
हीरे मोतियों से जड़े हुए सुवर्ण के तलवार
--युक्त म्यान की भाँति विराजी कैकेयी
उस की कटाक्ष की फाँसी में फँसा राजा !
क्या बताये, स्वर्ण वेलों में फँस गया राजा
मधुमक्खी जैसी फँस जाती आग में !

दशरथ पत्नियाँ गर्भवती बनीं;
डूबी अयोध्या हर्ष में, पृथ्वी भी
मेघों से पानी गिरा, वर्षा थी नयी
धूप का ताप हटा, हवा शीतल वही
नदियाँ भरी बाढ़ से, आये सरयू पर
हिमाचल से क्रौंच-सारस-पंक्ति, हंस भी
नव-वर्ष-हर्षोन्माद-कल-निनाद से
अंकुर निकले पेड़ों में ; हर्ष से घूमे
भ्रमर यहाँ वहाँ काननों में,
रोमांचित उठी भू-वनिता सुगन्ध से
हरे भरे तृणांकुरों से; मयूरों की आवाज़
निकली, राम के आगमन की वार्ता आयी
हुआ भुवन में उल्लास, माँ का दूध बहा
सपने में देखा क्षीरसागर ही कौशल्या
मुस्कानों से चन्द्र शिशु था ऊपर लहरों में
आया शिशु किनारे पर, कौशल्या ने बुलाया

मोग्गरळ्वन्ददिम् बन्देर्दुदंकमम्,
तळिर वेरळिन्दप्पुतेर्देयम् सुधासुखके ।

लक्ष नक्षत्र मय वक्षान्तरिक्षदा
क्षीर सागरदिम् किशोरशशि वरुवन्ते,
प्रतिभा तटिल्लतेय सुप्रभा स्फूर्तियिम्
कविय मनदिम् महा काव्यमुद्भविपन्ते,
मरुदिनम् चैत्रनवमिय शुभ मुहूर्तदोळ्
पिरियरसि वेसलेयादळ् पसुळेचेल्वम्
स्थिरा सुखम् पेर्चुवोल्. श्री रामन अनन्तरम्
मूडिदनु भरतना कैके वसिरिन्दे. मेण्
लक्ष्मणम् शत्रुघ्नरेंबवळि मक्कळ्गळम्
पेत्तळ् सुमित्रे, मगधेश्वर तनूजे. आ
मंगळ महोत्सवके विडदे नलिदत्तवनि
तुम्बिदत्तशरीर गन्धर्व गायनम्
नीरव निशा नभोदेशमम्. नलिदुलिदु
नर्तिसिदरप्सरेयरेरचि पूवलिगळम्
हार केयूर सारसन नूपूर रवके
किविगोट्टु वेरगादुदा अयोध्या मनम्
वीदि वीदिगळल्लि, साकेत पुरजनर्
नेरेदु संगीताभिनय वाद्यकलेगळिम्
कोंडाडिदरु राजनम्, कोनेदु देवर्कळम्.
पोळ्तुवरे, पद्धतिय, मेरेगे पुरोहितर्
नामकरणम्गेय्दु, नुडिदु नल्वरकेयम्,
जातकम् बरेदु, कणिवेळ्दरा नालवरुम्
नेलकोळ्ळितम् गेय्दु नेलदरिकेयवरागि
नेसरम् मीरि पोळेदपरेम्बुदम्, कीर्तियिम्
मत्ते सच्चरितेयिम्. गेरेनगेय किरियोडल
पसुळेदिगळ् दिनम् दिनदिनम् बळेवन्ते

आया धीरे से वह, चढ़ा गोद में कोमल अँगुलियों से
पकड़ कर; लगा कली बनी फूल ही

लक्ष नक्षत्रमय वक्षान्तरिक्ष के
क्षीर सागर से बाल शशि आये
या प्रतिभा तटिल्लता की सुप्रभा स्फूर्ति में
कवि मन से महाकाव्य निकले,
दूसरे दिन चैत्रमास के नौवें दिन पर
कौशल्या का प्रसव हुआ, सुकुमार का
जनन हुआ, बड़ा हर्ष पृथ्वी का !
भरत को जन्म दिया कैकेयी ने
मगधेश्वर पुत्रि सुमित्रा ने जन्म दिया
अमल यमल लक्ष्मण-शत्रुघ्न को
उस मंगल महोत्सव में हर्ष भरा लोक में,
भरा अशरीर गन्धर्वगान व्योम में
फूलों की वर्षा की अप्सराओं ने
नर्तन भी किया सन्तोष में !
हार-केयूर-सारसन-नूपुर निनाद में
विस्मित और आकंपित रही अयोध्या
गली-गली में इकट्ठे हुए लोग
साकेत के, वाद्यसंगीतों से राजा का
अभिनन्दन किया, देवों की स्तुति भी
शुभ अवसर पर पुरोहित ने किया
नामकरण बच्चों का, आशीर्वाद भी
लिखा जातक भविष्य-कथन किया,
चारों भी धरा की रक्षा करें,
लोक प्रेम पाकर चारों चमकेंगे
सूर्य के तेज से भी अधिक रूप में
कीर्ति सच्चारित्र्य से ही
रेखामात्र बाल चन्द्रमा जैसा बढ़ता
दिन प्रतिदिन निशामाता के अंक पर

वेळ्वक्कदिरुळिनव्वेय तोडेय तोट्टिललि,
नेरेदना श्री राम चन्द्रनम्बेयेदेंयलि,
मत्ते कंडवरेल्लरक्षियलि.

कौसल्ये

तन्नात्मवने सुतन सौन्दर्य सुधेयल्लि
करगिसिदळद्दि सक्करेयवोल्. वगेयिन्दे
जगमनितुमुम् जारि मगने मूजगमायतु ।
सकल साधनेयादुदा राम शुश्रूपे,
प्रेमवे निखिल पूजेयायतु. सर्वेन्द्रियके
मोहद शिशुवदोन्दे मुद्दिन विषयमाय्तु
मायवादत्तुळिदुदनितुमुम् प्रज्ञेयिम्
जगळ्दु लयवोंदि. मुदिन मुद्देयोलन्ते
मै तुम्बि चेन्दळ्दिर् कोमलतेवेत्तेसेदिर्द
नीलोत्पल निभांगनम् कुलदीपचन्द्रनम्
वळ्दिळ तन्नेलेवेरळ्गळिम् मोग्गनिरदप्पि
लल्लेगैवन्ते आलिंगिसुते मुद्दिसुते
मंडेयम् मूसि केन्नेगे कुरुळनोत्तुत्ते
वेण्णेनुण्दोळ्गळ्म तन्न नळिदोळ्गळ्म
मट्टि सोंकिगे सोगसुवळु तायि. तिळिगोळन
तावरेय सेरेय तुंबिगळन्ते चंचलिप
कण्गळिगे कविदुवरे सुरुळियुंगुरगुरुळ्
नोडि नलिवळु तोरि मेरेवळु, पुलकसुखके
मैमरेयुवळु, दशरथन राणि, कौसल्ये,
रामचन्द्रन् तायि.

मगन कंगळ नोडि

बाननीक्षिसिदन्ते, मगन तोदलम् केळि
कडलनालिसिदन्ते वेच्चुवळ् ताय् सुय्दु
ओमें आ हूहगुर शिशुविद्दकिद्दन्ते

वैसे श्रीराम बढ़े माता की गोद में
जो देखते रहे उन की आँखों में भी

कौशल्या की आत्मा मिली थी
पुत्र सौन्दर्य सुधा में, शर्करा की भाँति
हटा लोक दिल से, सुत ही बना त्रिलोक
साधना थी रामसेवा में ही
राम प्रेम ही देव पूजा, सुन्दर शिशु
बना मोह सर्वेन्द्रियों के लिए उस के,
और विषय सब हट गये दिमाग से
सच ही लय पाये रामचन्द्र में ही
मुग्धता का साकार रूप था वह
अंकुरों की कोमलता थी, नीलोत्पल निभा भी
वह था इक्ष्वाकु कुल का प्रकाश
लगता जैसे पर्ण-रूपी हाथों से गले
लगाती कली का, वैसे गले लगाती
कौशल्या, चूम लेती शिरोघ्राण करती
शिशु के कोमल बाहु स्पर्श कर आनन्द पाती
सरोवर के कमल-पुष्प-वृत-भ्रमरों की भाँति
शिशु-मुख-कमल-भ्रमरायमान अलकावलि
संवारती, सुख पाती, रोमांचित होती
दशरथ की रानी, रामचन्द्र की माता।

सुत की आँखें देखे लगता व्योम देखा
बाल सहज वाणी सुन लगता समुद्र निनाद
लगता भय माता को; पुष्प समान

गिरिभारमागि बरे, नेगहलारदे ताइ
तेंकिदळु कातरिसि मगनभ्युदय शंकेयिम्
मत्तोमें पञ्चेदोट्टिल् विम्बदलि तन्न
मुद्दुकन्दगे वदल् काणिसे महामूर्ति
कूगिकोंडळु दुष्ट कुग्रह चेन्ष्टेयेन्दळुकि
वळियट्टला कुलपुरोहितन सन्निधिगे,
ब्रह्मर्षि गुरु वसिष्ठम् वंदु ताय्मनके
पेळ्दर्नितेन्दु सन्तैकेयम् :

"बिडु मगळे,

भीतियम्. निन्न मगनप्राकृतम्. निन्ने नाम्
जानदोळिर्दु कंडुदम् पेळ्वेनालिसु. मेले
सम्भ्रमम् तुम्बिर्दुदमर लोकंगळोळ्
मिन्चिनंचिन देवता चरण संचारदा
पद चिन्हेगळ् पोळेदुवमित नक्षत्रगळवोल्
कंडेनी पृथिवियेडेगा शक्ति राशिगळ्
धाविसुतिदर्दुदुम. नन्नात्मववरनेये
हिंवालिसैतरल् पोक्कुदुम अयोध्येयम्
ज्योतिश्शरीरि निन्नंकदलि मलगिर्द
ज्योतिश्शरीरनम् कंडेनी शिशु रूपनम्,
देवर्कळेल्लरुम् दिव्य सुमगळनेरचि
मोयिसिदरवनम् दिवोधुनिय पीयूप
तीर्थदिम्, पाडि सुरगेय घोपंगळम्.
धन्यनाम् ! धन्ये नीम् । धन्यमो रविकुलम् !"
मणिदु गुरुपदकातनम् सत्करिसि कळुहि,
मुद्दाडिदळु गत्ते मत्ते मगनम् तायि
कौसल्ये, मगु रामनुम् मुगुळुनगुवंते.

नसुमोळेत ह्यालुहल्गळ सालेसव वाय
जोल्लुगुव तुटिदेरेय किवि सोगद तोदलिन्दे

देह कभी बन जाती गिरि भार
उठाने में असमर्थ कौशल्या थक जाती;
सुत का भविष्य क्या होगा यूँ शंकित थी
वज्रनिर्मित झूले में कभी देखती और रूप
ही शिशु के जगह पर, कभी चिल्लाती
भूत-बाधा समझ कर उसे
एक बार बुलाया कुलपुरोहित
बता दी देवी ने सारी बात उन से
ब्रह्मर्षि गुरुवशिष्ठ ने आकर समझाया
माता के मन का सान्त्वन किया

"चिन्ता छोड़ो बेटी.
तुम्हारा बेटा असामान्य है, सुनो
ध्यानस्थ मैं ने कल जो देखा कहूँ
ऊपर अमर लोकों में उल्लास भरा था
देवता चरण संचार में सौदामिनी सी लगी
अमित नक्षत्रों की भाँति पदचिह्न लगे
देखा, सारी शक्ति दौड़ती पृथ्वी तरफ़
मेरी आत्मा लगी पीछे, आयी अयोध्या में
ज्योतिर्मयि, तुम्हारे अंक पर देखा
सुप्त-ज्योतिःशरीर को, शिशु रूप को;
देवताओं ने दिव्यपुष्पों की वर्षा की
उस पर, नहाया व्योमधुनी के अमृत-तीर्थ से
गाया सुरगेय घोष
मैं धन्य, तुम भी देवि, रघुकुल धन्य है"
गुरुचरणों पर प्रणिपात किया कौशल्या ने
बारबार गले लगा लिया माँ ने
उसे देख कर मुसका दिया रामचन्द्र भी

ईषदंकुरित दाँत दीखते मुँह में
लार-रस गिरता ओठों से

दादियर करेगे होंगेज्जे किंकिणि कुणिये
परिचम्बेगालिन्दे, कैंगुडल् पिडिदेद्दु
तिप्प तिप्पने दट्टितडियिट्टु नडेयुवा
साहसके सन्तसम्वडुते, कैंविडलोडने
मरळि नेलमम् पिडिव वाल लीलेगळिन्दे
रामनोडगूडि बेळेदरु मूवरनुजरुम्
ततंम्म तायगळोल्मेय तोट्टिलोळ्, गोंचल्
अदोन्दरोळे नाल्मलरलरुवन्ते.

इरलिरल्
ओन्दु हुण्णिमेयिरुळ अरमनेय उद्यान
शाद्वल श्याम वेदिकेयल्लि राणियर्
तम्म मक्कळ्वेरसि विहरिसुत्तिरे विविध
हर्प भापित्त मोददोळ् शिशु रामनागसदि
मेरेद पूर्णेन्दुवम् नोडि मोहिसि, पडेये
हलुवि, हम्बलिसि, काडिदनु कौसल्येयम्
गगन चन्द्रम् नरर धरणिगैतरनेन्दु
तायेनितु सन्तैसिनुडिदोडम्, सहिसदेये
पळयिसिदना वालनक्षि केम्पेर्वोनिम्
किरुदोळ्गळुद्दमम रवितारेगळे सोल्व
वान्देसेगेनीडि. पोन्नोडवेयम रत्नमम्
वण्ण वण्णद पण्गळम् भक्ष्य भोज्यंगळम्
कोट्टोडवुगळनेल्लमम् नूंकि, चंद्रगे
गोगरेदनम्मन वेदर्केयम् केलवकोत्ति,
केळ्दरेदे सुय्ये. आ रोदनक्कुरे वेच्चि,
पितृमनम् मरुगे, दोरे कनलुदु तानायेडेगे
वरे, नेरेद दादियर् सरिदरल्लिन्देनो,
गति मुन्दे तमगेन्दु वेदरि. कौसल्ये, तायि,
मगनुल्वण स्थितिगे कडिदु कातरेयागि

वाल सहज सुललित वाणी थी
दाई के वुलाने पर निनाद निकलता
वच्चों के सुवर्ण नूपुरों से, लेटे ही नाचते,
हाथ के सहारे से खड़े रहते वच्चे,
क़दम रखने का प्रयास भी करते,
यहाँ वहाँ क़दम रखने पर हँस पड़ते सव
हाथ छोड़े गिर जाते जमीन पर
—इस विध वाल-लीलाओं में वढ़े
रामचन्द्र के साथ और भाई भी
अपनी-अपनी माताओं के प्रेम में
एक ही पेड़ के पुष्प गुच्छ के फूलों की भाँति

—सुख सन्तोप से दिन वीत रहे थे
किसी पूर्णिमा की रात में, राजोद्यान में
शाद्वल-श्याम मंच पर रानियाँ
अपने वच्चों के साथ विहार करती रहीं
सुख संकथा विनोद गोष्ठी में
उतने में राम की दृष्टि पड़ी आसमान के
पूर्ण चन्द्र पर, आकृष्ट हुआ राम
रो-रो के माँगने लगा चन्द्र कौशल्या से
माँ सान्त्वना कर रही थी वातों से,
कहती थी गगन का चन्द्र नहीं आता नीचे,
नहीं सुना राम ने, चन्द्र की तरफ़ हाथ
वढ़ा कर रोया, आँखें लाल वन गयीं
सुवर्ण रत्न के आभूपण, रंगरंग के
फल-पुष्प भक्ष्य भोज्य सव
फेंक दिये, रोया चन्द्र के लिए
देखने वालों में करुणा उत्पन्न हो जिस से;
वच्चे के रोने से दिङ्मूढ़ वन कर
वात्सल्य से राजा वहाँ आ गये
डर से निकल पड़ी दाई वहाँ से
माता कौशल्या भी दिङ्मूढ़ वनी

एगैयलरियदेये कंगेट्टु दम्मय्य,
सुम्मनिरो, ओ नन्न कण्मणिये, कन्दय्य
कैमुगिवेनळवेडवेन्देन्दु कंवनिगूडि
मुंडाडि, रविवंशदवनेम्व करुविन्दे नीम्
तिळिदेळपसुळेयम् पीडिसुत्तिहेयेन्दु
वैदळा शशियम् मनम् मुनिदु.

दशरथम्

वरे, कैके कंवनि मिडिदु पेळ्दळेल्लमम्.
केळुता दोरेय कनलिके दुगुडकेडेयाय्तु,
मरुगिदनु मगनासे तन्न वल्मेगे मीरि
कैगूडिसलसदळमला अेन्दु. शिवशिवा,
तिरेगरसनादरेननोन्दु कूसिन वयके
वडतनवनोडरिसितला ! तन्न सिरियिनितु
पुसियाय्ते' ? अेनुत कौसल्येयिम् रामनम्
करेदेत्तिकोंडु जिकेगळेडेगे कोंडोय्दु
तोरि, नैदिलेगोळदोळीजुवंचेगळेडेगे,
मत्ते वेळ्दिर्गळ्लि कण्णुकण्णिन् गरिय
केदरि कुणियुव नविलुगळ वळिगे, अल्लिन्देयुम्
रत्न कृत कृतक खद्योत संकुलमयम्
चामीकरालंकृतम् लता भवनमम्
पोक्कु नडेनडेदिरदे तोर्दोडम् शिशुरोदनम्
नेरेदुदल्लदे तन्निदुदिल्ल.

मुंगाणदेये,

नृपति मन्त्रि सुमन्त्रनम् करेसलातनुम्
वालनाकंक्षेगच्यरिवडुते मौनमिरे
वेळ्पमर्दन्ते, वन्दळ् मृदुकियोर्वळा
ताणक्के, किशोर भरतननांतु कोंकुळलि,
कंडुदे तडम् अमंगळवनोक्षिसिदन्ते.

वच्चे की स्थिति देख कर,
किंकर्तव्यविमूढ़ा कौशल्या कहती रही
"चुप रहो मेरे लाल, मेरी आँख, चुप हो
हाथ जोड़ती हूँ, मत रोओ वेटा,"
खुद रोती रही कौशल्या, चूमती
वच्चे को, क्रोध से शाप देती रही
चन्द्रमा को, 'कोमल वाल को क्यों पीड़ा
तुम्हारी, वह रविकुल का है, इसलिए ?'

दशरथ के आगमन पर
रोती कैंकेयी ने वताया सारा वृत्त
सुनते ही राजा का दुःख वढ़ा
पुत्र की इच्छा-पूर्ति अपनी शक्ति से वाहर है
सोच कर विषाद प्रकट किया
ऐ भगवन्, हूँ पृथ्वी का राजा
किन्तु वच्चे की इच्छा पूरी नहीं कर पाता
असहाय मैं, "मेरी सम्पत्ति झूठी है,"
कहते-कहते कौशल्या से शिशु उठा लिया
चरते हिरणों के पास ले गया
नील कमल सरोवर के हंसों के पास गया
चाँदनी में रंग-रंग के पूँछ फैला कर
नाचते मयूरों के पास ले गया
वहाँ से रत्नकृत कृतक खद्योत संकुल
चामीकरालंकृत लता भवन में गया
—कहीं जाने पर भी शिशुरोदन
समाप्त नहीं हुआ, और वढ़ा ही
दिङ्मूढ़ वन कर
राजा ने वुलाया मन्त्रि सुमन्त्र को
वाल की इच्छा सुन कर वह भी रहा मौन
उतने में भूत की भाँति आयी वूढ़ी
वहाँ किशोर भरत को हाथ में ले कर
अमंगल का दर्शन हुआ, यूँ

मोगम्मुरिदु मातु निल्लिसिदरनिवरुमल्लि
कैंके होरतागि.

कुडुविल्लु वागिद मेय्य
तोन्न वेळ्गलेविडिद कर्रनेय कुञ्जतेय,
गूळि हिणिलिनवोलु गूनुबुव्विद वेन्न
सुक्कु निरि निरियागि वत्तिद तोवल्पत्ति
बिगिदेल्वुगूडिना शिथिल कंकालतेय,
पल्लुदुरि बोडाद वच्चु बायिय, कुळिय
केन्नेगळ, दिट्टिमासिद कण्ण कोटरद,
कर्बुन मोरडु मोगद, कूदलुदुरिद बोळु
पुर्विन विकारदा, वेळ्वक्कि तिप्पुळने
मंडेयम् मुत्ति केदरिद वेळ्ळनेय नविर,
अस्थिपंजरदन्तेवोलस्थिर स्मविरेयम्
कंडोडने कैके नडेदळ् वळिगे. नुडिसिदळ्
तायवोल् साकि सलहिद दासि मन्थरेय !
नोडुत्तिरे नेरेद जनरा विरुपद वृद्धे,
मातनालिसे वागिदरसिय किविगदेननो
पचिमर्डिलिदोंदु मुकुरमम् पोरदेगेदु
नीडिदळ् नगेगूडि कैके तानदनोय्दु
तोरिदळ् दोरेय तोळ्गळलि रोदिसुतिर्द
रामंगे. पोळेये पडिनेळलिनलि वानेडेय
चन्दिरम् पडेदेनिन्दुवनेंदु कुणिकुणिदु
नलियतोडगिदननिवरुम बिल्लुवेरगागे.
संतसदोळा दासि, मुदिगूनि, रामनम्
मुद्दिसवत् वयसि तोळ् चाचला कौसल्ये
कन्दंगमंगळम्, मुट्टदिर् मुट्टदिर् !
वेडवेडेनुते निवारिसिदळाकेयम्
मुदि मन्थरेय मैत्रि जज्जरितमप्पंतेवोल्

सोच कर सभी चुप रहे कैकेयी के सिवा

धनुप की भाँति कुब्ज-शरीर-धारिणी
चमड़े पर सफ़ेद धब्बों से विकृत कालिमा
पीठ पर लगता था कूबड़ बैल की भाँति
लगती बिलकुल शिथिल कंकाल ही
सूखा चमड़ा, बहुत ही पका था
मुँह छोड़ के भागे थे दाँत, सभी
गालों में खड्डे पड़े थे दोनों तरफ़
आंखें धँसी थीं कोटरों में, धुँधली थी
मुँह था कड़ा लोहे के टुकड़े की भाँति
बाल चल पड़े थे, भौहों से
लगती अतीव विकृत रूपा
सिर पर थे कई सफ़ेद बाल
बगुलों के रोओं की भाँति
अस्थि पंजर थी अस्थिर स्थविरा
देखकर ही कैकेयी चली पास
बोली दासि मन्थरा से, मातासी दाई से
देख रहे थे लोग; विकृत बूढ़ी ने
कहा कुछ रानी कैकेयी के कान में
अपनी थैली से दर्पण निकाल कर
दिया कैकेयी के हाथ में, सूचना दी.
मुसकराती कैकेयी उसे उठ कर
गयी राजा के पास, राम रो रहा था
तभी भी राजा के बाहुओं में
दर्पण में प्रतिबिम्ब देखा चन्द्र का
हर्ष से नाचने लगा राम, 'चन्द्र मिला
चन्द्र मिला' यूँ कह कर; सब मूक बने देख के.

विकृत शरीर की दासी मन्थरा ने
राम को प्यार से चूमना चाहा, बढ़ा हाथ
किन्तु कौशल्या ने रोक दिया उसे, कहा भी
'अमंगलकारी हो तुम, मत छूओ'
बूढ़ी मन्थरा का स्नेह जर्जरित हो उठा

मुरिदोल्मेयवमानदिन्दे कण्बनि चिम्मि
निल्लदल्लिम् नडेदळय् भरतनम् बिगिदप्पि,
तुळिद सर्पिणियन्ते मुळिसिनुरियिम् पोगेद्दु
सुय्दु हेडेयेत्ति.

कैकेय तातनोर्दिनम् ।
वेंटेयायासदिम् वैगुवोळ्तडवियोळ्
परिवारदोडने बरुतिरे, पळुवे तानळुवन्ते
गोळिट्टु दोन्दु शिशुरोदनम्. कूर्गेलसदिम्
पिन्तिरुगुतिर्द पार्थिवनोळुदिसितु करुणे,
कट्टलिह कब्बके मोदलगुद्दलिय पूजिपोल्.
नडेद्दु नोडिलिके, काणिसितोन्दु दस्युशिशु
मुळ् मण्णु तरगेलेयिडिद नेलद मेलिरुवे
मुत्ति, हा, विकृति वक्रतै रूढुगोंडन्ते ।
पेत्तवर सुळिविल्लदिर्द पेण्पसुळेयम्
पिडिदेत्ति कट्टिरुंपेयनोरसि सन्तैसिदन्.
गूबेयपशकुनद विकारदुलियन्नेर्दु
कवियुतिरे काडुगळ्तले तन्दनूरिगवळम्
दारिय नडेव मारियम् मनेगे तरुवन्ते,
मुन्दण महादुःख दावानलके तन्न
किरुगज्जदा ओन्दे किडिय मुन्नुडिइडुव
विधि विलासदलि ! वेळेदुदु कूसु कुळ्ळागि,
गूनागि, तोत्तागि, कर्रगे, जनर कण्गे
हेसिनाकृतियागि ! कंड कंडवरेल्लरुम्
कुब्जेयलनार्येयम्, तन्देतायिल्लदा
परदेशि कन्नेयम्, चि : एन्दु, तोलगेन्दु
थू एन्दु, सायेन्दु नाय्मरिगे कडेयागि
भाविसिदरा नृपन कट्टाणेयम् मोर्दु
कडेगण्चि मनुजरोलुमेय सवियनोंदिनितुमम्

आँसू निकल पड़े अपमान से
रुकी नहीं मन्थरा क्षण भी,
भरत को गले लगा; लगती थी
मन्थरा उस समय ताडित नागिनी सी

एक दिन की वात है,
कैकेयी के पिता जी शिकार से थक कर
लौट रहे थे सन्ध्या-समय में; सुना
मार्ग में शिशुरोदन, लगा वन रोता था
शिकार में रत राजा में भी करुणा उपजी
गृह निर्माण से पहले होती फावड़े की पूजा
चला वहाँ तक; देखा दस्युशिशु एक
काँटे मिट्टी पत्ती सव के वीच में थी
चींटियाँ लगी थीं, विकृति भी
लगता वक्रता साकार बनी थी
माँ-बाप का पता तक नहीं था
उठा ली लड़की, चींटियाँ हटा दी
अशुभ स्वर उल्लू का विकृत रूप में चढ़ा
अन्धकार भी, तव लायी गयी घर पर
वह लड़की, मार्ग का भूत घुसा घर में
भविष्य के महादुःख दावानल के
चिनगारी का प्रस्ताव ही लगी वह ।
विधि विलास ! शिशु वढ़ा वह
छोटे क़द में विलकुल कुब्जा
लगी काली, अत्यन्त विकृत रूप में
लोगों ने उस की अवहेलना की
कुब्जा, अनार्या, अनाथा लड़की
जिस के माँ-वाप का पता तक न था
—और भी कहा लोगों ने, 'हटो हटो
मर जाओ', कुत्ते से भी तुच्छ को
नृप की आज्ञा का भी उल्लंघन किया
मानव स्नेह का तनिक भी परिचय न मिला उसे

काणदे मिगद तेरदि मिडुलिल्लदेये बेळेडु
जडतेवेत्तिद सोम्बेगे नन्दि यय्ववोल्
जरेदु मन्थरेयन्दु पेसरनेसेदरु, मोगवे
केसरनिडुवन्ते. कन्नडियन्नुटाकेयुम्
प्रतिबिम्ब रीतियम् कैकोंडळा जनद
मनद विकृतिगे तन्न मैय् बिडंबनवोप्पवोल्

परिदुदय् पोळ्तुवोळे निन्देयोळ् बेळे बेळेडु
कुवरियागि कुब्जे संभविसिदळु कैके
केकय राजसतिगे आ धरायल्लभम्
मन्थरेय भीपणकान्ततेगे बगेगरगि
मगुवानाडिप केलसकाकेयने वेससिदन् केळ्,
मळेहोय्द तेरनायतु मन्थरेय गरुधरेगे,
चैत्रनागमवायतु मन्थरेय शिशिरकगे,
मंथरेय बाळ् निदोगे शशियुदि सिदन्तायतु,
मन्थरेय मृत्युविगे तानमृत सेचनेयायतु,
शुष्कता शून्यतेयोळोलमे संचारवायतु
बदुकु सार्थक मधुरमायतु मिशुसन्निधिय
प्रेम सौन्दर्य महिमेयलि रूप विहीने
रूपसियोळिर्द्दु तनगिल्लदा चेलुविनलि
लीलाडिदळ् तेलवयोल् पलोळिद्दालिन
चुरु मेरेदळु कैके मन्थरेय तोडेयल्लि
काळाहि भोगदलि होळेव हेडेमणियन्ते,
तारतम्यदि मत्तिनितु चारुतरमागि
चक्कमुक्किय कल्लिनंतरंगदोळग्नि ।
गुप्तमागिर्पन्ते बाह्य विकृतिय मध्ये
मन्थरेय हृदयदलि सुप्तवागिर्द रति,
चेलुवोलवुगळ चिलुमे ताम् कण्देरेदुदोय्यने
मुक्त मुक्ताहार धारेयलि. तन्नोन्दु

वह लड़की, मस्तिष्क के विना वढ़ी
जड़ता का ही मूर्त रूप वनी
लोगों ने फिर भी मिट्टी उड़ा दी
नाम रखा उस का 'मन्थरा', ही
दर्पण में जैसा प्रतिविम्व दीखता वैसा
जनमन की विकृति का प्रतिविम्व वनी वह

दिन वीते कुब्जा पली निन्दा में
कन्या वनी, तभी केकय रानी को
वेटी हुई कैकेयी; धराधिप ने सोचा
मन्थरा का अकेलापन हटाने नियुक्त
किया, वेटी को सम्हालने के लिए;
मन्थरा नाम मरुस्थल पर पानी गिरा
मन्थरा नाम शिशिर में वसन्तोदय हुआ
जीवनान्धकार में चन्द्रोदय हुआ,
मृत्यु में अमृत का सिंचन हुआ
शुष्क शून्यता में प्रेम संचार हुआ
जीवन सार्थक वना मधुर भी
शिशु सन्निधि में, प्रेम प्रभाव में
रूपविहीन मन्थरा ने मोद लिया,
कैकेयी के रूप में सौन्दर्य में जैसे
कोयले का टुकड़ा तैरता क्षीर में;
मन्थरा के अंक पर विराजी कैकेयी
कृष्ण सर्प के शिरोरत्न की भाँति;
वर्णतारतम्य से लगता था रम्य ही
शिलान्तर्गत गुप्ताग्नि की भाँति
मन्थरा की विकृति में छिपी रति
प्रेम सौन्दर्य की झलक खुली
आनन्दाश्रु वहे धारा प्रवाह

जीवितके राजपुत्रिये सर्वसुखभागी.
मरेतळन्यायमम्, मरेतळपमानमम्,
मत्ते मरेतळु तन्ननुम् ताने, कैकेयोळ्
सायुज्यवोन्दि.

मन्थरेयिन्तु वडुकुतिरे
वेक्कसवनेनेंबे, बाल्यकौमारदिम्
यौवनवनतिगळेदु जरेगे दाटिदळहा
नरेयेरि, सुक्कंडरि, पोरमेय् विकृति पेर्चि !
तनु विकारम् पेर्चिदन्ते मनसिन ममते
नूर्मडिसित्तु कैकेय मेले. कैकेयुम्
नर तिरस्कृते विकृत मन्थरा दासियम्
शैशव कृतज्ञता प्रेमदिम् प्रीतिसुत्ते
नेरे नेरेदळंगजन होसमसेय होळेहोळेव
शृंगारशर शरत्लक्ष्मि योल्, विधि नियमदिम्
मेले कालान्तरके, देव दशरथ नृपम्
लोक मोहक सतिय सोवगिन सुळिगे सिक्कि
कैकेयम् मदुवे निन्दुदु, मन्थरे दासि
साकेत राजधानिगे बन्दळवळोडने,
नेरळन्तेवोलर रविवंशदरसरूरादोडेम्
मन्नणे कुरुपतेगे तानेल्लि, ? मुदिगूनि
मन्थरेगे मोलद कोडाडुदु सोगम् शनिएनुते
शपिसिदुदु मन्दिः कंडरे हुब्बु गंटिक्कि
दूर सरिदुदु मोसळेगंडन्ते सनिहदके
बरगोडर् गाळि सोंकुवुदेंब मैलिगेगे
पेसि, वलिगीश्वराराधनेगे सेरिसर्
उणलिडुव पोळ्तु पोरनूंकुवर् तोनूगळ्
किरिराणियाज्ञेगे किवुळ् गेळ्दु. कौसल्येयुम्
लक्ष्मणनताइ मोदलप्प सिंरिवेंडिरुम्

अपने जीवन में सर्वस्व थी कैकेयी
अन्याय अपमान सब भूली वह
अपने को भी भूली, मिली कैकेयी में ही

मन्थरा के दिन बीत रहे थे
आश्चर्य है, बाल्य कौमार्य यौवन सब
पीछे पड़े, बूढ़ी बनी मन्थरा
बाल सफ़ेद बने, चमड़ा पका, विकृति बढ़ी
तनुविकार जैसा बढ़ा वैसा प्यार बढ़ा
कैकेयी पर, शतगुण; कैकेयी भी
तिरस्कृत विकृत मन्थरा दासी का
आदर करती थी कृतज्ञता से
लगती थी कैकेयी अनंग के शृंगार-शर
शरल्लक्ष्मी की भाँति; विधिनियम !
कालान्तर में दशरथ चक्रवर्ती
लोकमोहक कैकेयी के सौन्दर्य में फँसा
विवाह किया; तभी चली मन्थरा
साकेत में कैकेयी के साथ,
बिलकुल उस की छाया की भाँति
था राज्य रविवंशधराधिपों का
किन्तु मान्यता कहाँ कुरूपता की ?
कुब्जा का सुख शशविषाण था
हटा दिया जनता ने शनीचरी कह कर उसे
दृष्टिपथ से वह दूर हटी
जनता उसे छूती नहीं
देवपूजा में उसे प्रवेश नहीं मिला
भोजन के समय बाहर हटाते सेवक
छोटी रानी कैकेयी की आज्ञा तोड़कर भी
कौशल्या, लक्ष्मण की माता सुमित्रा भी

मन्थरे अनिष्टेयेनुता नवति कैकेयम्
वळिसेरिसदे हेदरि हेसि हिजरिदरा
गूभूनियिरलेडने, सहिसिदळनितुमम् कुब्जे
तन्नोडतियोल्मेय सोगके जोवबने बेळ्दु.
कन्मारनडिगल्लेनल् बाळ्दु.

इरुतलिरे,
बेसलेयादळु कैके भरतनम्. मन्थरेगे
मूरनेय कण् मूडिदन्तायतु. बाळ्गोन्दु
पोसबोल्मे चेन्दळिर् चिगुरिट्टु तानन्दिनिम्
जिपुण वडवम् कडवरनप्पिकोळ्वन्ते,
हगलिरुळ् कैकेय तनूजनम् सलहिदळ्
ला दस्युसजि, हडेद तायिये नाण्चुवोलन्ते.
मन्थरेय मोहसरसियोळिन्तु, तावरेय
तेरदि भरतम् बेळेदनय् मत्ते-शत्रुघ्नन्
लक्ष्मण श्री रामरुम् तंतम्म् जननियर
मत्ते दादियरक्करेय सक्करेय सविगे
वळेयुतिर्दरु कुंजरु देवकुंजरगळोल्
शैशवम् कळेदु बाल्यम् मेय्गे मैदारे
गुरु, वसिष्ठन कैयोळाळ्व पार्थिव जनके
तगुव विद्याभ्यासदंकुरक्कगेयायतु
कलितरै विल्विज्जेयम् वेदमम्, नीति
नय विनय नियतियम्, शार्दूल शास्त्रकम्
वेन्टे कल्पिद कलियुवन्ते; पर्वत शिरदि
जन्मवेत्तिद तोरे समुद्राभिमुखमागि
परियलरिवन्ते, बन्डेय कोरेदु वरशिलिप
भुवन सुन्दर कलालक्ष्मियम् सृजिपन्ते
कोसल सुखिसुवन्ते. देहदलि मनदल्लि
ज्ञानदलि गुणदल्लि वीर्यदलि धैर्यदलि

कैकेयी को पास नहीं बुलाती थी
जब कभी मन्थरा रहती थी साथ
सारा सहन कर लेती कुब्जा
स्वामिनी का सुख भविष्य सोच कर

दिन बीते
कैकेयी ने जनम दिया भरत को; आँख
मिली तीसरी मन्थरा को; जीवन में
नया अंकुर कोमल उपजा उस दिन से
कंजूस नर सुवर्ण भाण्ड को रखे वैसा
दस्युसति मन्थरा ने भरत को पाला
—देखकर जननी भी लज्जित हो
मन्थरा के प्रेम सरोवर में बढ़ा भरत
कमल की भाँति; शत्रुघ्न लक्ष्मण
श्रीराम भी बढ़े कुंजतरु देवकुंजरों की
भाँति अपनी-अपनी जननी दाइयों के
मीठे वात्सल्य में.

शैशव बीता, बाल्य प्रारम्भ हुआ
गुरु वशिष्ठ जी के सान्निध्य में
प्रारम्भ हुआ पार्थिवोचित विद्याभ्यास
सीख ली धनुर्विद्या, वेद, नीति, नय-विनय
नियति शिकार भी शार्दूल शावकों का
जैसी गिरिशिखर में समुत्पन्न नदी
समुद्राभिमुखी बहेगी
जैसा वरशिल्पी शिला में भुवन-
-सुन्दर कला लक्ष्मी का निर्माण करेगा
कोशल देश भी सन्तुष्ट हुआ,
देह-मन, ज्ञान गुण, वीर्य-धैर्यों में

सह्याद्रि श्रृंग संकुलदन्ते निमिरेळदु
मैत्रियिम् स्पर्धिसिदरोव्वरोव्वर कूडे
नाल्वरुम्, नाल्कु तोळुगळेळे दशरथगे
क्षमेयल्लि सत्वदल्लि, शान्तगांभीर्यदलि,
भद्ररूपदलि, तनुकान्तियलि मेरेदना
श्रीरामचन्द्रनम्बर महामंडलमे
मूर्तिवेतन्ते, हिरियण्णनम् चिरदिनम्
वेम्बिडदेयिर्द लक्ष्मण देवनेसेदनय्
रागानुरागदलि, वेगदलि, रभसदलि,
हृदय वैशाल्यदलि, श्यामं श्रीयोलुमेयलि,
नेरेयेर्द मळेगालद महातरंगिणिय
धीरशैलियलि. सौन्दर्य श्री देवतेय
पट्टद कुमारनेने, कैकेय सोवगनेल्लमम्
मथिसि सारवनेरेद नवनीतकिन्द्रधनुविम्
वर्ण तेजस्सोदगिदन्तिर्द कृतियन्ते वोल्
भरतम् महात्मनेसेदनु दिव्य तेजस्वि,
त्यागवुद्धियलि, निर्वेगदलि तपदल्लि
संयमद सौंदर्यदल्लि, निरसूयेयलि,
रसकाव्य सत्कलाभ्यासदध्यात्मदलि,
सोदर प्रीतियलि, वालन्नपियेम्वन्ते
भाजननागि रामगौरवके. भरतंगे
छाया शरीरवेने शत्रुघ्ननिर्दनु तन्न
नाम लक्ष्यके लक्ष्मणम् तानेनल्.

कोसलदोळा

गूनि मन्थरेय मितिमीरिद तिरस्कृतेयुमम्
संतृप्तं सुखियुमम् काणे । भरताभ्युदय
चन्द्रोदयक्कुविदन्तवळ हृज्जलधि
पाळु कोरकल् वंडेयिम् वक्रमागिर्प

सह्याद्रि शृंग संकुल की भाँति
स्पर्धा की चारों ने स्नेह में
लगे चार हाथ ही दशरथ को
क्षमासत्व-शान्ति-गाम्भीर्य में
भद्ररूप तनुकान्ति में
लगा श्री रामरूप में साकार वना
व्योम महामण्डल ही.
वड़े भाई का सतत अनुयायी लक्ष्मण
लगा वर्षाकाल की महातरंगिणी की
घोर गति में, राग अनुराग
हृदय की विशालता में, श्री सौन्दर्य में
वरकुमार ही लगा सौन्दर्य-श्री-देवियों का
भरत, कैकेयी का सौन्दर्य सार ही
इन्द्रधनुप के वर्ण से जो युक्त-कृति
भरत था महात्मा दिव्यतेजस्वी
त्याग निर्वेग तपसंयम सौन्दर्य में
रसकाव्य सतताभ्यास अध्यात्म में
सहोदर प्रेम में असूयारहित, भरत
वना भाजन रामगौरव का, था भी
वाल ऋषि की भाँति
भरत का छायाशरीर वन कर
शत्रुघ्न था लक्ष्मण को लक्ष्य मान कर

कोसल देश में
अति तिरस्कृता थी कुब्जा मन्थरा
किन्तु अत्यन्त सन्तृप्त सुखी
हृदय-जलधि उस का चढ़ता भरताभ्युदय
के चन्द्रोदय पर.

मोरडु दडदन्तिर्दवळ मेय्यनुच्छ्वसित
हूर्वोर्मिमाला समूहदिन्दव्वलिसि
मुच्चि. नररन्यरिल्लायित्तु मन्थरेय
लोकक्के, कैके भरतर विना. दशरथम्
कैके भरतंरिगागि, कैके भरतरिगागि
कोसलमयोध्येगळ् शशि सूर्य ताराळिगळ्
कैके भरतरिगागि, भरतनाल्विकेगागि ई
पृथिवि ! हा, मन्थरेय ई ममतेयावर्तदोळ्
सुट्टु रेगे धूळि तरगेले तिर्रनेये सुत्तुवोल्
सिल्कि घूर्णिसदिहुदे पेळ् त्रेतामहायुगम् !

टीलों से विकृत किनारे को लहरियाँ
ढाक लेती; हर्षोर्मिमाला ने ढँकी थी
उस की विकृति, कैकेयी भरत के
सिवा उस के जग में और नहीं था;
दशरथ भी था कैकेयी-भरत के लिए
कैकेयी-भरत के लिए भी कोशल अयोध्या
शशिसूर्य नक्षत्र सब उन्हीं के लिए
भरत शासन के लिए थी पृथ्वी

तप्त भूमि पर सूखी पत्तियाँ चक्कर काटती
हाय, मन्थरा के मायामोह के आवर्त में
फँसा हुआ त्रेतामहायुग भी कहो कैसा
नहीं काटेगा चक्कर, बारबार ?